ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

कार्तिक २०७६ नवम्बर २०१९

गुरु नानकदेव जी का ५५०वां प्रकाश पर्व

₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

दिल्ली शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ **17 सितंबर** शाम 6:30 बजे

अगर आप इस बैच में एडमिशन लेना चाहते हैं तो पहले ही स्थान आरक्षित कराएँ।

हिंदी साहित्य

द्वारा – डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

(वैकल्पिक विषय / वीडियो क्लासेज़)

सामान्य सत्र	तीव्र सत्र (प्रतिदिन दो कक्षाएँ)
आरंभ : 23 सितंबर	आरंभ : 25 सितंबर
दोपहर 3:00 बजे से	दोपहर 4 से 6:30 तथा शाम 7 से 9:30 बजे

सीसैट बैच

बैच-1 18 सितंबर, सुबह 8 बजे	बैच-2 18 सितंबर, शाम 6:30 बजे
बैच-3 23 सितंबर, दोपहर 3:30 बजे	बैच-4 6 नवंबर, सुबह 11:30 बजे

BASIC ENGLISH CLASSES

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ

23 सितंबर शाम 6:00 बजे

प्रयागराज शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ **4 अक्तूबर** प्रातः 8:00 बजे

अगर आप इस बैच में एडमिशन लेना चाहते हैं तो पहले ही स्थान आरक्षित कराएँ।

हिंदी साहित्य

द्वारा – डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

(वैकल्पिक विषय / वीडियो क्लासेज़)

सामान्य सत्र	तीव्र सत्र (प्रतिदिन दो कक्षाएँ)
आरंभ : 15 सितंबर	आरंभ : 15 सितंबर
प्रातः 11:15 बजे से	दोपहर 1:30 से 4:00 तथा शाम 4:30 से 7:00 बजे

दृष्टि मॉक टेस्ट सीरीज़ कार्यक्रम

IAS

प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़-2020

सामान्य अध्ययन और सीसैट

प्रारंभ **1** सितंबर से

UPPSC

प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़-2019

सामान्य अध्ययन और सीसैट

प्रारंभ **8** सितंबर से

दिल्ली और प्रयागराज दोनों केंद्रों पर

ऑनलाइन और ऑफलाइन

हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों माध्यमों में

☀ दिल्ली (मुखर्जी नगर) एवं प्रयागराज (सिविल लाइन्स) के अतिरिक्त हमारी कोई शाखा नहीं है। भ्रामक विज्ञापनों से बचें।

दिल्ली शाखा का पता : दृष्टि टेस्ट सीरीज़ सेंटर, 707, मुखर्जी नगर, दिल्ली

प्रयागराज शाखा का पता : ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज

Ph.: 8448485517, 8448485519, 87501 87501, 011-47532596

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

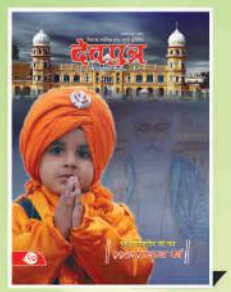

कार्तिक २०७६ ■ वर्ष ४०
नवम्बर २०१९ ■ अंक ५

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gmail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003592502
IFSC- SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

कुछ वर्ष पूर्व आप सबने समाचार पत्रों और दूरदर्शन पर देखा होगा विश्वभर के अनेक देशों के वैज्ञानिकों ने मिल कर एक 'महाप्रयोग' किया था। इस महाप्रयोग के लिए धरती के अन्दर बहुत गहराई में एक प्रयोगशाला बनाई गई थी। पदार्थ के सूक्ष्मतम कण की खोज करते वैज्ञानिक जो इससे पूर्व में परमाणु तक पहुँच चुके थे और बाद में परमाणु के नाभिक में प्रवेश कर वे इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन तक भी पहुँच चुके थे। महाप्रयोग से वे इससे आगे की यात्रा करना चाहते थे। प्रयोग में सूक्ष्मतम कण के गर्भ में हुए महाभयंकर विस्फोट के पश्चात् वैज्ञानिकों ने प्रसन्नता से घोषणा की- ''हमने एक ऐसे तत्व की खोज की है जो पूरे ब्रह्माण्ड और सृष्टि के प्रत्येक अवयव में उपस्थित है। जीवित और अजीवित प्रत्येक पदार्थ में यह तत्व समान रूप से उपस्थित होता है जिसे हमने नाम दिया है 'क्वाण्टा'।''

सिक्ख पंथ की स्थापना करने वाले पूज्य नानक बाबा पूरी दुनिया में यह संदेश देते रहे कि कण-कण में भगवान है। एक ईश्वरीय तत्व प्रत्येक पदार्थ में उपस्थित है। वे ऐसा केवल कहते थे ऐसा नहीं। एक बार वे भ्रमण करते हुए मक्का जा पहुँचे। मक्का की ओर पैर करके वे सोए ही थे कि एक मौलवी ने आकर उठा दिया- ''अच्छा खुदा क्या केवल उधर है? ठीक है तुम मेरे पैर उस दिशा में कर दो जिस तरफ खुदा न हो।''

मौलवी उनके पैर जिस तरफ घुमाता वह देखकर चौंक जाता कि मक्का उसी तरफ दिखाई देने लगता। मौलवी ने उनके पैर पकड़कर क्षमा याचना की।

आप कहेंगे पहले विज्ञान का 'महाप्रयोग' और फिर बाबा नानक का प्रसंग ये क्या झमेला है? तो बच्चो! दोनों भागों को समझो। हमारे संतों की वाणी से जो बातें हजारों वर्षों से प्रकट हो रही थी वही आज विज्ञान की भाषा में सिद्ध हो रही है।

बाबा गुरु नानक देव जी साहेब का यह ५५०वाँ प्रकाश पर्व है। आइए, उनकी वाणी को पढ़ें गुनें तभी हम सच्चे अर्थों में उनके सिक्ख (शिष्य) बन सकेंगे।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- एक थी लारी - उज्ज्वला केलकर ०५
- तेजी का अभिमान - इं. ललित शौर्य ०९
- सिक्के के दो पहलू - गोविन्द भारद्वाज २०
- अनार के पेड़ - बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' २७
- निम्मी को मिली सीख - डॉ. निशा मिश्रा ३२
- अनिवार्य... - अंकुश्री ३६
- सूझबूझ - कीर्ति श्रीवास्तव ३९
- जादुई घड़ी - जयति जैन 'नूतन' ४५
- बोतल बोली - हरिन्दर सिंह गोगना ४८

पत्र

- एक पाती बच्चों के... - डॉ. प्रभा पंत २५

अनुवाद

- मटकी और बटकी - नरवर पटेल/डॉ. हुँदराज बलवाणी २३

आलेख

- गुरु नानक देव जी - रवीन्द्र पाटनी १४

ललित निबंध

- गाँव का पीपल - डॉ. राजेशलाल मेहरा ०८

कविता

- अटकन बटकन - डॉ. शशि गोयल ०७
- चलो चद्रलोक में - प्रमोद सोनवानी 'पुष्प' ३४
- जंगल में मंगल - दिनेश दर्पण ३४
- झलकारी बाई - डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव ४१
- शिशु गीत - सुनयना अवस्थी ४४
- मेरा घोड़ा - अब्दुल मलिक खान ४७

प्रसंग

- मनु की रामलीला - गोपाल माहेश्वरी १८

बाल प्रस्तुति

- बिल्ली मौसी - वर्षा प्रजापति २६
- फूल - राधिका ठाकुर २६

चित्रकथा

- लकी स्टोन - देवांशु वत्स १३
- तो फिर - संकेत गोस्वामी २९
- आधी समझ गहरी उलझ - देवांशु वत्स ४२

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १०
- गाथा वीर शिवाजी की (३३) - ११
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी १६
- स्वयं बनें वैज्ञानिक - डॉ. राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी १९
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे २२
- विषय एक कल्पना अनेक - कुसुम अग्रवाल, डॉ. पुष्पा पटेल, प्रो. सी.बी. श्रीवास्तव ३०
- हमारे राज्य वृक्ष : पंखियाताड़ - डॉ. परशुराम शुक्ल ३५
- आपकी पाती - ४०
- यह देशहै वीर जवानों का - ४१
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ४३
- छः अंगुल मुस्कान - ४६
- पुस्तक परिचय ५०

आवरण परिचय

बच्चो! इस कार्तिक पूर्णिमा से गुरु नानक देव जी का ५५०वाँ जयंती वर्ष आरंभ हो रहा है आवरण पर आप उनके जन्मस्थान श्री ननकाना साहिब (अखण्ड भारत के एक नगर) का है।

रचनाकारों से निवेदन

सभी बाल रचनाकारों एवं साहित्यकारों से निवेदन है कि यदि आप देवपुत्र में प्रकाशन हेतु अपनी रचना अणुडाक (E-mail) से भेजना चाहते हैं तो कृपया अपनी रचना- editordevputra@gmail.com पर भेजिए।
अब से devputraindore@gmail.com का उपयोग केवल सदस्यता एवं व्यवस्था कार्यों के लिए किया जाना अपेक्षित है।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें! देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक - **53003592502**
IFSC- SBIN**0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM** " आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

एक थी लारी

कहानी

उज्ज्वला केलकर

मधुरवन में एक जामुन का वृक्ष था। वृक्ष पर मधुमक्खियों का एक एक बड़ा छत्ता था। उसमें लारी नाम की एक मधुमक्खी रहती थी। एक दिन सुबह लारी उठी। उसने शीशी ली और मधु लाने निकली।

उड़ते–उड़ते वह एक मैदान में आयी। वहाँ ऊँची हरी–भरी घास उगी थी। घास पर एक पतंगा झूल रहा था। लारी को देखते ही वह झूम उठा।

''लारी...लारी...लारी... आरी...आरी...आरी...

चलो चलो, हम खेले आँखमिचौली।'' पतंगे ने लारी को पुकारा।

लारी ने कहा, ''ना बाबा ना। मुझे काम है। मधु लेने जाना है।''

''बस, थोड़ी देर ही खेलेंगे...दस पंद्रह मिनिट...बस।'' पतंगा मनाने लगा। लारी भी खेलने के लिए लालायित हो गई। पहले पतंगा छिप गया। लारी इसे ढूंढने लगी।

फिर लारी... फिर पतंगा... फिर लारी... फिर पतंगा... दोपहर हुई, तभी लारी को याद आया, उसे मधु लेने जाना है।

''अब चलती हूँ। बहुत देर हो गई।'' लारी ने कहा।

''अच्छा! राम राम नमस्ते'' पतंगे ने अपने पंख हिलाते हुए उसे विदा किया।

लारी उड़ते उड़ते एक फुलवारी में आ पहुँची। वहाँ छोटे बड़े पेड़ पौधे थे। उन पर तरह तरह के रंग–बिरंगे फूल खिले थे। फूलों पर तितली नाच रही थी। लारी को देखते ही वह प्रसन्न हो गई। तितली बोली,

''लारी...लारी...लारी..आरी...आरी..आरी''

चलो चलो, हम झुमेंगे, नाचेंगे। मजे करेंगे।''

लारी ने कहा, ''तितली दी...तितली दी... क्या करूँ, मेरा भी मन कर रहा है, जरा–सी झूम लूँ मैं...जरा–सी नाच लू मैं...पर क्या करूँ, मुझे बहुत काम है। मधु लेने जाना है।''

तितली बोली, ''लारी, बस्स! थोड़ी ही देर...थोड़ी ही देर नाचेंगे हम... नाचेंगे हम ...झूमेंगे हम।''

लारी तैयार हो गई। फिर दोनों नाचने लगी।

''ता...थै...तक थै...। तक...तक...तक... थै।''

अब शाम होने को आई। लारी को मधु की याद आ गई। उस ने कहा, ''तितली दी...तितली दी... अब मैं चलती हूँ।''

तितली बोली, ''अच्छा! नमस्ते...राम...राम...''

लारी उड़ते उड़ते अब तालाब के पास पहुँची। तालाब में कमल खिले थे। कमल के पंखुड़ी पर बैठ कर भँवरा गुंजन कर रहा था। ''गूं... गूं... गूं... गूं...''

भँवरे ने कहा, ''आरी... आरी... आरी... आओ लारी...लारी.... लारी... गूं... गूं... गूं... गूं... चलो हम गायेंगे आज... मौज मजे करेंगे आज। मौज मजे करेंगे हम। कमल पंखुड़ी पर गाएंगे हम।''

चलो लारी, शुरु करो– ''सा रे ग म प ध नि सा''

''सा नि ध प म ग रे सा'' लारी ने भी सरगम छेड़ी।

भँवरे का गाना सुन कर लारी सुध–बुध खो बैठी। अपना होश, अपना काम भूल कर वह भी गाने लगी।

अब शाम ढलने लगी। अँधेरा गहराने लगा। भँवरा लारी को विदा कर के अपने घर चला गया। फिर लारी को मधु की याद आई। वह कमल से कहने लगी,

''कमल कमल मधु दे। मेरी शीशी भर दे।''

कमल ने कहा, ''मेरा मधु खत्म हो गया। क्यों री लारी! तुझे विलंब हो गया?

लारी बोली, ''पतंगे के साथ खेली आँख मिचौली, तितली के साथ नाच किया।

भँवरे के साथ गाना गाया, इसलिए मुझे विलंब हो गया।''

फिर लारी उड़ते–उड़ते पुनः फुलवारी में गई। चमेली के पास जाकर कहने लगी।

''चमेली चमेली मधु दे। मेरी शीशी भर कर दे।''

चमेली ने कहा, ''मेरा मधु खत्म हो गया। क्यों री लारी! तुझे विलंब हो गया?''

लारी बोली, ''पतंगे के साथ खेली आँख मिचौली, तितली के साथ नाच किया।

भँवरे के साथ गाना गाया, इसलिए मुझे विलंब हो गया।''

इस तरह लारी बगीचे के सारे फूलों से मधु मांगने गई, किन्तु सभी फूलों ने कहा, उन का मधु खत्म हो गया है। लारी विलंब से आने के कारण उन के पास कोई मधु बचा नहीं है।

लारी अब पूरी तरह थक चुकी थी। उसे भूख लगी थी। नींद भी आई थी। वह अपने छत्ते के पास लौटी। द्वार पर दो रखवाले थे। उन्होंने द्वार पर लारी को रोक लिया। उसमें से एक ने कहा, ''बताओ तुम्हारी शीशी। बताओ, तुम कितना मधु लायी हो?''

लारी की शीशी तो खाली थी। रखवाले ने उसे अंदर जाने के लिए मना किया। लारी को सारी रात वृक्ष पर बैठे–बैठे गुजारनी पड़ी। रातभर वह भूख से व्याकुल थी। सर्दी से सिकुड़ रही थी।

दूसरे दिन भोर होते ही लारी उठ गई। वैसे भी उसे नींद कहाँ आई थी? ठंड से परेशान जो थी। उसने फिर अपनी शीशी उठाई और फुलवारी की ओर चल दी। अब सुनहरी धूप फैल गई थी। फुलवारी में तरह तरह के फूल खिलखिलाते हुए हँस रहे थे। लारी गुलाब के पास पहुँची। उसने गुलाब से कहा, ''गुलाब दा! गुलाब दा! मधु दे। मेरी शीशी भर दे।''

गुलाब ने कहा, ''ले ऽ ले ऽ ले ऽ ले। चाहे जितना ले...''

फिर वह चंपक के पास गई। फिर गेंदे के, जूही के, चमेली के पास गई। सारे फूलों ने कहा, ले ऽ ले ऽ ले ऽ ल। चाहे जितना ले...''

अब लारी की शीशी भर गई। वह अपने छत्ते के पास पहुँची। रखवाले को शीशी दिखाई। रखवाले ने उसे अंदर छोड़ा। वह अंदर गई खा पी कर सो गई।

– सांगली (महा.)

अटकन बटकन

कविता

डॉ. शशि गोयल

अटकन बटकन दही चटक्कन
मैंने खाया आलू
घर के अंदर मैंने देखा
घुसा हुआ था भालू।

अटकन बटकन दही चटक्कन
मैंने खायी रोटी
देख देख बंदर को भैया
उछल रही थी मोटी।

अटकन बटकन दही चटक्कन
मैंने पीया पानी
छज्जे के ऊपर जा बैठी
देखो बुढ़िया कानी।

अटकन बटकन दही चटक्कन
मैंने घुमाया लट्टू
घम्मर घम्मर नाच रहा है
बांध के घुंघरू टट्टू।

• आगरा (उ.प्र.)

गाँव का पीपल

ललित निबंध

डॉ. राजेशलाल मेहरा

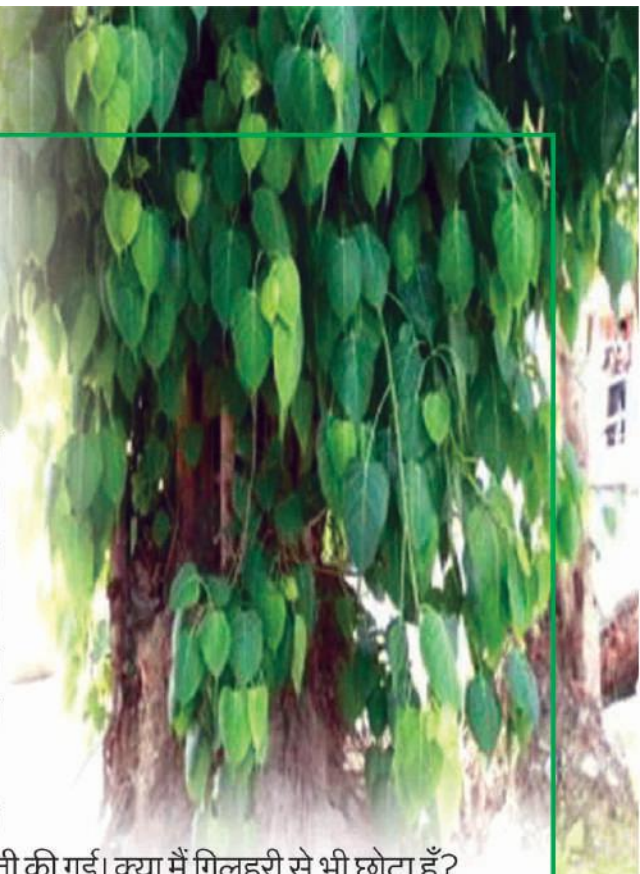

मैं गाँव का पीपल सब मेरे अपने हैं। मुझे देख पास आकर सब अपने मन की बात कह देते हैं। मेरी छाया में सबके पुरखे बैठा करते थे। बतियाया करते थे, जमाने भर का सुख दुःख, अच्छा–बुरा। मैंने किसी को अकेला कहाँ रहने दिया जिससे सब मुँह मोड़ लेते थे ठुकरा देते थे। मैंने उन्हें भी आश्रय दिया। पहले आश्रम कहाँ होते थे, मैं ही तो आश्रम था। मैं मौन पीपल भी सदियों से श्रोता बना रहा, अब भी हूँ, अफसोस बैठने वाले कम हो गए। जमाना विकास की तरफ दौड़े चला जा रहा है।

मैं सहमा हूँ सोचकर कि इस दौड़ में भला कहीं मेरी भी गिनती होती है? कहीं मेरा भी आकलन होता है? रामराज्य में तो गिलहरी की भी गिनती की गई। क्या मैं गिलहरी से भी छोटा हूँ?

याद करता हूँ कि स्मृतियाँ के पटल पर दृश्य उभरते चले आते हैं। अपने मन की बात छुपाकर रखने वाली कितनी बहू–बेटियाँ मुझसे अपने मन की बात कह देती थीं, न जाने कितने अपने सपने मुझे सुना जाया करते थे। सबकी आस–उम्मीद मैं जानता–समझता था। कहूँ कुछ नहीं मगर वो सब मानते रहे कि मैं उनका अपना हूँ। मेरी आँखों के सामने कितने बच्चे–बच्चियों ने अपना मासूम बचपन बिताया। मेरे ही सामने सब बड़े हुए, मस्त खेलते–कूदते हुए। घोर अभावों के दौर में भी मैंने कभी किसी को निराश नहीं होने दिया। मैं खुद अपने जीवन का उदाहरण देकर समझाता देखो पतझड़ में सूख जाने के बाद मैं फिर हरा–भरा हो जाता हूँ। बुरा समय हमेशा नहीं रहता। देर–सबेर सबके अरमान पूरे होते हैं। अब देखता हूँ तो बड़ी पीड़ा होती है कि बच्चे अब कितने सयाने हो गए हैं कि खेलना –कूदना ही भूल गए। बचपन से बेहतर भी कोई उपहार होता है? जिसके बदले बचपन छीन रहे हैं। अरे! इन बच्चों की प्यारी मुस्कान और खिलंदड़े–से नटखटपन को देखकर तो मैं भी हरिया जाता हूँ और बरस पड़ता हूँ इन पर आशीर्वाद बन।

बेटियाँ जब ससुराल के लिए विदा होती हैं उस समय जब मैं सामने पड़ता हूँ तो आँखों से वे बरस पड़ती हैं, उनका कलेजा भर आता है। उनको लगता है कि उनका बस चले तो मुझसे लिपट कर रो पड़े। दादा हूँ न मैं सबका, भला मुझसे वृद्ध होगा कोई गाँव में?

कितने झगड़े यहाँ बैठकर सुलझाए गए। एक दूसरे से भला बुरा कहने वाले भी अकेले में मेरे पास आते, अपने मन की पीड़ा और उलझनें सुना जाते। हाथ लगे शिकायत भी दर्ज करा जाते। लगता था उन्हें जैसे में कोई न्यायाधीश हूँ, जो उनके साथ अन्याय नहीं होने देगा। कितनी उलझनें मैंने अपनी शीतल छाया देकर सुलझा डालीं। कितने घर मैंने टूटने से बचा लिए। कितने मन मुटाव मैंने दूर किए। मैं मौन हो कहता अपनी सब कड़वाहट, बैचेनी मुझे दे जाओ और मेरी ठंडी छाँव ले जाओ। मिल–जुलकर अच्छे से रहो, कोई कुछ कह दे तो सहन कर लो, दूसरों के भले के लिए कड़वी बातों का थोड़ा विष पी लोगे तो मरोगे नहीं, कल्याणकारी शिव हो जाओगे। फिर सब तुमने अपने पीड़ा, कष्ट कहा करेंगे। मान–अपमान, आवेश सब क्षणिक होते हैं जिनके दिल में सबके लिए शुभकामना भरी होती है। उसमें भगवान बसता है। दूसरों के आँसू पोंछकर उन्हें सांत्वना देना क्या यह छोटा काम है? कोई जाने नहीं, अखबार भी छापे नहीं, मगर तुम्हारा हृदय तो आत्मसंतोष से तृप्त हो जाएगा।

– इन्दौर (म.प्र.)

तेजी का अभिमान

कहानी

इं. ललित शौर्य

एक बहुत सुन्दर बगीचा था। जिसका नाम मधुवन था। मधुवन में सालभर रंग–बिरंगे फूल खिले रहते थे। फूलों की खुशबू से पूरा मधुवन महका करता था। फूलों के रस को चखने के लिए बगीचे में तितलियाँ, भौरें, मधुमक्खियाँ मंडराते रहते थे। तितलियों ने तो अपनी पूरी बस्ती मधुवन में ही बसा ली थी। सुंदर फूलों पर बैठी बहुरंगी तितलियाँ बड़ी ही आकर्षक लगती थी।

मधुवन में तिल्ली और तेजी नाम की दो तितलियाँ भी रहती थीं। दोनों ही बहुत परिश्रमी थीं। दिनभर फूलों का रस इकट्ठा करतीं। धूप हो या वर्षा वो अपने काम में जुटी रहती थीं। तिल्ली का रंग–रूप बहुत आकर्षक नहीं था। उसके पंख काले थे। उसमें भूरे रंग के गोल–गोल धब्बे थे। प्रथम दृष्टि में देखने पर तिल्ली किसी को भी अच्छी नहीं लगती थी। लेकिन कोई एक बार उससे बात करले तो फिर उसका मित्र हुए बिना नहीं रह पाता। उसकी वाणी में अद्‌भुत जादू था। उसकी बातों में सम्मोहन था। मधुवन में सभी उसके व्यवहार की बहुत प्रशंसा करते थे। जो उससे एक बार मिलता फिर उसका मन बार–बार तिल्ली की बातें सुनने को करता।

वहीं दूसरी ओर तेजी की सुन्दरता को देख कोई भी सम्मोहित हो जाता। उसका इन्द्रधनुषी रंग–रूप किसी को भी उसकी ओर खींच लेता। भले ही तेजी मधुवन की सबसे सुंदर तितली थी पर उसका व्यवहार उतना ही कड़वा था। कोई भी उससे एक बार बात कर लेता तो उसे दुबारा उससे बात करने का मन ही नहीं होता। तेजी को अपनी सुन्दरता पर अथाह घमंड था। उसके इसी घमंड ने उसे पूरे मधुवन में अलोकप्रिय बना दिया था।

तिल्ली हमेशा से तेजी से मित्रता करना चाहती थी। उसने कई बार कोशिश भी की। लेकिन हर बार तेजी उसे अपमानित करती थी। तेजी ने कई बार तिल्ली की तितलियों के समूह के बीच में खिल्ली उड़ाई थी। वो तिल्ली के रंग–रूप को लेकर व्यंग्य करती। उसे नीचा दिखाती। इस सबके बावजूद तिल्ली के मन में तेजी को लेकर किसी भी प्रकार द्वेष पैदा नहीं हुआ। उसने हमेशा तिल्ली को अपना मित्र ही समझा।

एक बार मधुवन में कुछ लोग आ गए थे। उनको हाथों में जालियां थी। वो खोज–खोजकर सुंदर और रंगीन तितलियों को जाल में फंसा रहे थे। जो तितलियाँ सुंदर नहीं थी। उसे वो यूँ ही उड़ा देते। सभी तितलियों का घर से निकलना कठिन हो गया था। वो भूख से बेहाल थी। तेजी भी घर में दुबकी

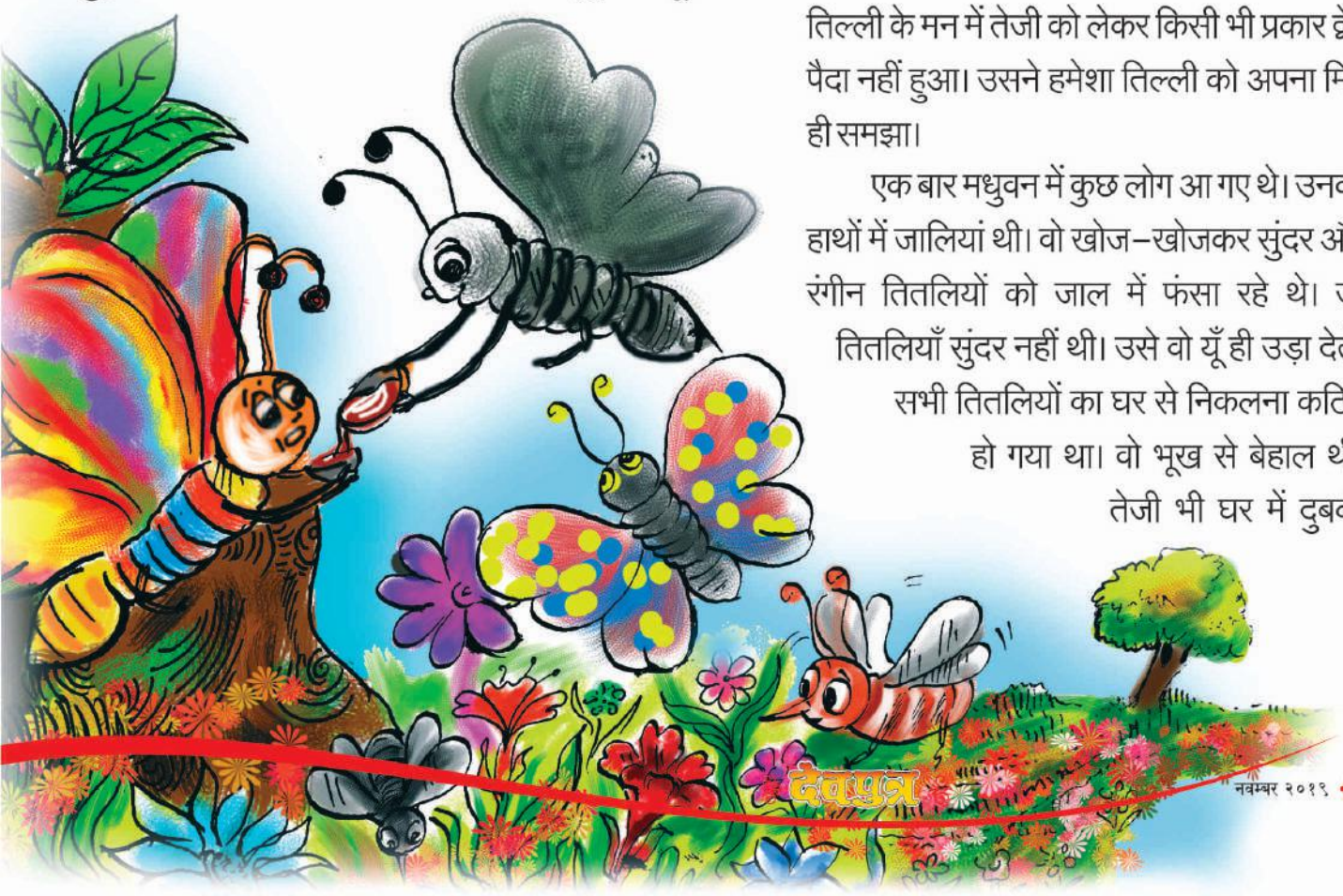

रहती। तीन दिन से उसने कुछ खाया–पिया नहीं था। जब तिल्ली को यह बात पता चली तो वो तुरंत तेजी के पास गई। उसने तेजी की ओर पीने को फूलों का रस बढ़ाया। पहले तेजी सोचने लगी, फिर उसने सारा रस एक ही घूँट में पी लिया। तब जाकर उसकी जान में जान आई। वह थोड़ी लज्जित भी थी। उसने तिल्ली से कहा, ''मैंने हमेशा तुम्हारा उपहास किया, लेकिन आज तुमने मेरे प्राण बचाए। मैं क्या कहूँ मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा। यह उपकार मैं जीवन भर नहीं भूल सकती।''

तितली बोली, ''मैंने तुम्हें सदा अपना मित्र समझा है। मित्रता में एक दूसरे की सहायता सहयोग करना कर्तव्य होता है। इसमें उपकार की कोई बात नहीं है। मैंने तो अपनी मित्रता का धर्म निभाया है। अब ये बात छोड़ो उन शिकारियों को कैसे मधुवन से भगाएं ये सोचो।''

''चलो, मधुमक्खियों से मदद माँगते हैं। अगर वो शिकारियों पर हमला कर दें तो शिकारी दुम दबाकर भाग खड़े होंगे।'' तिल्ली ने कहा।

तेजी और तिल्ली दोनों मधुमक्खियों के पास सहायता के लिए पहुंचे । मधुमक्खियों की रानी सहायता लिए तैयार हो गई। रानी समेत मधुमक्खियों की सेना ने शिकारियों पर हमला कर उन्हें खदेड़ दिया। मधुवन पुनः दमकने लगा।

तिल्ली का स्वभाव भी अब पूरी तरह बदल चुका था। उसने इसका पूरा श्रेय अपनी मित्र तिल्ली को दिया। अब पूरे मधुवन में तेजी की सुन्दरता के साथ–साथ उसके सुंदर व्यवहार की बातें भी सुनाई देने लगी थी। तिल्ली और तेजी की मित्रता भी प्रसिद्ध हो चुकी थी।

– मुवानी (उत्तराखण्ड)

संस्कृति प्रश्नमाला

- लंकापति रावण की मृत्यु का रहस्य श्रीराम को किसने बताया?
- महाभारत युद्ध समाप्त होने के बाद माता कुन्ती कहाँ रहीं?
- रूसी भाषा में गाय को क्या कहते हैं?
- मार्तण्ड नाम के सूर्य के खण्डहर अपने देश में कहाँ हैं?
- हिरण्यकश्यपु का वध श्री विष्णु ने किस अवतार में किया था?
- छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक किस तिथि को हुआ?
- आचार्य सुश्रुत ने अपने ग्रंथ में कितने प्रकार की शल्य चिकित्सा का वर्णन किया है?
- प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों से संघर्ष करने वाली रानी अवन्ती बाई कहाँ की महारानी थी?
- राजस्थान के किस राज्य में ढाई साके हुए थे?
- दिवंगत शंकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थ जी ने कौन सी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक लिखी थी?

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

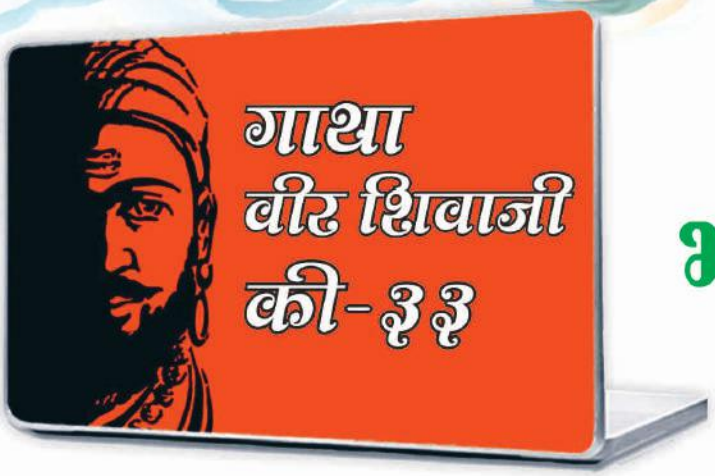

सुबह का भूला भूला नहीं कहाता

नेताजी पालकर–छत्रपति का वीर सेनानी। महाराज से नाराज हो आदिलशाह की नौकरी में चला गया। फिर मुगलों द्वारा कैद कर लिया गया। बाद में औरंगजेब के हुक्म से जबरन मुसलमान बनाया गया। नाम दिया गया– मोहम्मद कुली खाँ।

औरंगजेब ने उसे कन्धार और बलखबुखारे की ओर भेज दिय, जहां युद्धों में उसने खूब नाम कमाया और सेना में पदोन्नत होता रहा।

बादशाह औरंगजेब जब शिवाजी को किसी तरह दबा न सका तो उसे कुली खाँ याद आया। पिछले ९ वर्षों में कुली खाँ ने जिस तरह काम किया था उससे उसे विश्वास हो गया कि वह महाराष्ट्र की धरती और स्वधर्म को भूल चुका है। उसने उसे बुलाया और कहा– ''कुली खाँ तुम्हारा जैसा बहादुर ही शिवाजी को दबा सकता है। दिलेर खाँ के नेतृत्व में एक बड़ी सेना साथ लेकर जाओ और शिवाजी को जिन्दा या मुर्दा पकड़ कर लाओ।''

***

''आम्ही सर्व हिन्दू आहोत।'' मुगल सिपाही के मुँह से मराठी सुनकर गाँव का पाटील चकित था।

नेताजी पलकर स्वराज्य में पहुँच चुके थे। उन्हें पूर्ण संतोष था कि अब वे अपनी जन्मभूमि में हैं। दिल्ली से जब वे चले थे, मन में एक तूफ़ान उठ रहा था– ''मुझे महाराष्ट्र में कौन अपनाएगा? सभी गद्दार कह कर लांछित करेंगे। स्वधर्म और स्वसमाज में प्रवेश की तो कल्पना भी नहीं हो सकती। लेकिन यहाँ तो दूसरा ही वातावरण था। लगता था कि सतयुग में पहुँच गये हैं। कहाँ मुगल शासन में कराहती और रूढ़ि तथा अन्धविश्वासों से जकड़ी जनता, कहाँ यह मुक्त समाज।

सम्पूर्ण स्वराज्य में आनन्द की लहर फैल गयी– ''नेताजी पालकर लौट आये।'' छत्रपति के पास उनहें ले जाया गया तो अपने पुराने विश्वस्त सहयोगी को पाकर आह्लादित हो उठे। आगे बढ़कर गले से लगा लिया।

नेताजी को तो यह सब सपना सा लग रहा था। उसे यह कोई आशा न थी। महाराष्ट्र की धरती पर आकर, उसके पैर हठात् ही उसे यहां ले आये थे।

महाराज ने पंडितों को बुलाया। शास्त्र के विधान के बारे में विचार–विमर्श कर पंडितों ने 'शुद्धि–संस्कार' का विधान किया। तत्कालीन हिन्दू समाज के लिए यह पुरानी बात भी नयी ही थी।

१९ जून, १६७६ को शुद्धि समारोह आयोजित किया हुआ। कुली खाँ की जगह अब फिर नेता जी पालकर थे– शिवाजी के विश्वस्त सहयोगी। जनता में चर्चा थी ''सुबह का भूला शाम को घर पहुँच जाय तो भूला नहीं कहाता।''

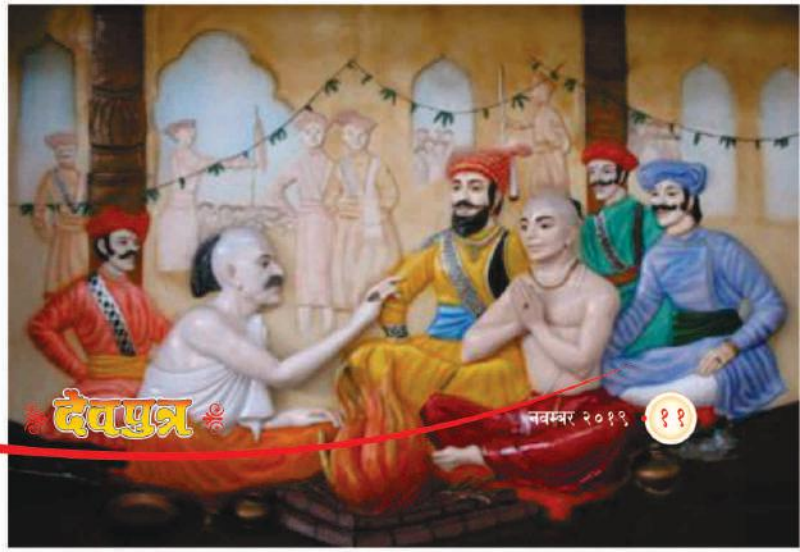

श्री दिविक रमेश द्वारा पुस्तक का विमोचन

छिंदवाडा। २३ सितम्बर में मेजर अमित एजुकेशन सोसायटी एवं महिला बाल विकास विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में ''बातें अपनी सुरक्षा की'' पुस्तिका का विमोचन किया गया पुस्तिका का उद्देश्य बाल शोषण की रोकथाम है, जिसे लिखा है शेफाली शर्मा ने और चित्र बनाएँ हैं स्वप्निल कपूर ने। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली से पधारे बाल साहित्यकार श्री दिविक रमेश एवं छिंदवाड़ा के बाल साहित्यकार श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव मुख्य अतिथि माननीय जिलाधीश महोदय श्री श्रीनिवास शर्मा, कार्यक्रम अध्यक्ष पुलिस अधीक्षक श्री मनोज राय एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शशांक गर्ग जी हमारे साथ रहे। कार्यक्रम का संचालन किया शिक्षिका डॉ. मनीषा जैन ने किया।

इस अवसर पर मेजर अमित एजुकेशन सोसायटी द्वारा श्री दिविक रमेश, श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव एवं श्रीमती विजया यादव को बाल कल्याण के क्षेत्र में योगदान हेतु उन्हें सम्मानित किया। वनिता मंच छिन्दवाड़ा द्वारा शेफाली शर्मा एवं महिला सशक्तिकरण अधिकारी मोनिका बिसेन का सम्मान किया गया।

सही उत्तर– संस्कृति प्रश्नमाला : विभीषण, धृतराष्ट्र और गंधारी के साथ वन में, गोव्यमाट (गौ–माता), अनन्तनाग (कश्मीर), नृसिंह, ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी, आठ, रामगढ़ (उ.प्र.), जैसाण (जैसलमेर), वैदिक गणित

प्रविष्टियां आमंत्रित

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९

प्रिय बच्चो!

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक **श्री शान्ताराम जी भवालकर की स्मृति** में आयोजित इस प्रतियोगिता में आप बच्चों द्वारा लिखी गई मौलिक एवं स्वरचित कहानियाँ आमंत्रित हैं। आपकी कहानियाँ हमें **३१ मार्च २०२०** तक अवश्य मिल जाना चाहिए।

प्रतियोगिता के पुरस्कार हैं –

प्रथम ११००/–, द्वितीय ११००/–, तृतीय १०००/–

एवं ५५०/– रुपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

अपनी कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम, घर का पूरा पता (पिनकोड सहित) अपना दूरभाष/मोबाइल नं. एवं अपना या अभिभावक का बैक खाता क्रं. आई एफ एस कोड़, खातेदार का नाम बैंक, शाखा का नाम भी अवश्य लिख भेजें जिससे पुरस्कार राशि सीधे उस खाते में जमा की जा सके। प्रविष्टि भेजने का पता –

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९

देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

लकी स्टोन!

चित्रकथा : देवांशु वत्स

।। गुरु नानक देवजी का ५५०वाँ जयंती वर्ष ।।

गुरु नानक देव

आलेख

रवीन्द्र पाटनी

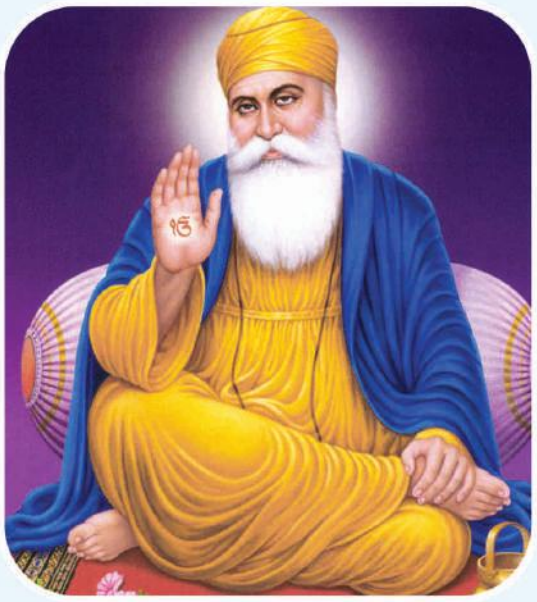

सिक्ख मत के आचार्य अज्ञान अंधकार के विनाशक जगद्गुरू नानक का जन्म १५ अप्रैल, १४६९ में राई मोदी तलवण्डी (जो अब ननकाना साहिब के नाम से पाकिस्तान में है) में हुआ था। लेकिन अनेक इतिहासकार कार्तिक पूर्णिमा को गुरु नानक जयंती मानते हैं।

गुरुनानक बचपन से ही शांत स्वभाव के थे। बचपन से ही ये अधिकतर एकान्त में बैठना ही पसंद करते थे। उनकी माताजी की बड़ी इच्छा रहती थी कि मेरा नानक भी और बालकों की तरह बाहर जाकर खेले। एक दिन माताजी के बहुत कहने पर आप बच्चों के साथ खेलने आये तो उनसे कहने लगे कि तुम कोई नया खेल खेलोगे या वही पुराने खेल जैसे रोज खेला करते हो। सबने नया खेल खेलने को कहा इस पर नानक जी ने सब बच्चों को पद्मासन लगाकर एक गोल पंक्ति में चुपचाप बैठा दिया और कहा कि मन ही मन में सत्यकर्तार–सत्यकर्तार कहते चलो– कितनी ही देर बच्चे इसी प्रकार समाधि में रहे। माता बड़े चाव से देखने आई कि मेरा नानक कैसे खेलता है। पर वह सब बच्चों को चुपचाप देख और भी चकित हुई। गुरुनानक की यह हर चिंतन में लवलीनता उत्तरोत्तर बढ़ती गई। इनके पिता ने सम्वत १५३२ में नानक जी को गोपाल पंडित के पास हिन्दी पढ़ने भेजा। सन् १५३५ में बृजलाल पंडित से संस्कृत की विद्या ग्रहण की । सम्वत १५३९ में फारसी मौलवी कुतुबुद्दीन साहब के पास पढ़ने बैठाया, परन्तु इन तीनों उस्तादों को गुरुजी ने अपने आत्मिक बल द्वारा अपना शिष्य बना लिया और समझाया कि विद्या का तत्व जाने बिना पढ़ा लिखा मनुष्य भी मूर्ख है। पिता ने पढ़ाने के प्रयास के बाद चाहा कि पुत्र कुछ काम में लग जाए इसी उद्देश्य से पिता ने पुत्र को कुछ रुपए देकर खरीददारी करने बाहर भेजा। रास्ते में कई दिनों के भूखे विद्वान संत मिले तो आपने सारे रुपये उनके खाने पीने का सामान खरीदने में अर्पण कर दिये। घर लौट कर पिता को सब हाल सुनाया और कहा कि जो सौदा आज

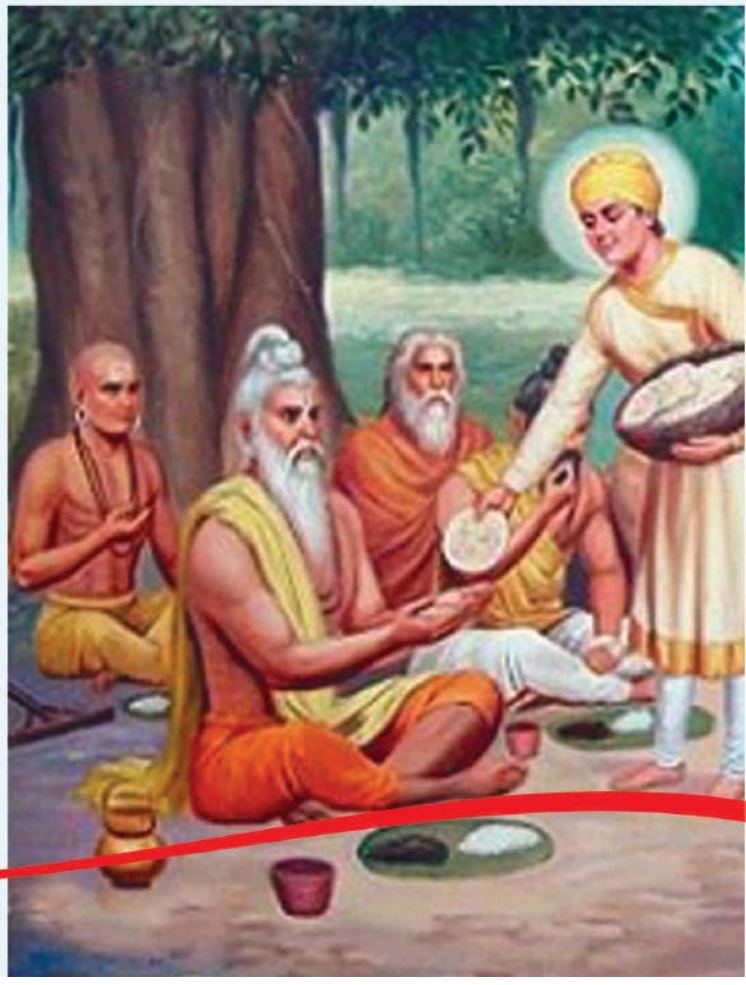

मैंने खरीदा है, उससे अधिक खरा और सच्चा सौदा नहीं खरीदा जा सकता था। इस पर उनके पिता क्रुद्ध हुए। इससे इनकी बहन नानकीजी को बड़ा दुःख हुआ। सम्भवतः १५४१ में नानकी जी अपने पति जयराम जी से कहकर गुरुनानक देव को सुल्तानपुर अपने घर ही ले आई तथा यहाँ सब लोगों के कहने पर १५४२ में गुरुजी ने दौलत खाँ लोदी के मोदी खाने की सेवा संभाल ली। सम्भवत १५४४ में आपका विवाह मूलचंद जी सुपुत्री सुलक्षणा देवी के साथ हुआ। जिससे आपके दो पुत्र हुए श्रीचंद्र व बाबा लक्ष्मीदास हुए।

यद्यपि सेवा गुरूजी मोदी खाने में करते थे परन्तु मन उनका ईश्वर की ओर ही रहता था। कितना सामान आप कई बार मुफ्त बांट दिया करते थे, परन्तु हिसाब किताब सब ठीक होता था। और कोई सामान जांच करने पर भी कम नहीं निकलता था। एक दिन १५५४ में आटा तोलते हुए एक दो तीन गिनते हुए जब तेरह पर पहुँचे तो गिनती–विनती सारी भूल गए और तेरा तेरा (सब कुछ प्रभु का) कहते ही सारा आटा तोल दिया।

यहीं आपने मोदी खाने का कार्य भी छोड़ दिया। यह शब्द गुरु साहब के मुख से कुछ ऐसे वेग से कहे जाते थे कि लोग चकित रह जाते थे। नानक अब केवल नानक ही न थे वह नानक से अब गुरुनानक हो गए थे। बस झट से अपने चित्त से विचार कर आपने निश्चय कर लिया अपने अन्तःकरण के प्रकाश से जगत के अंधकार का विनाश करना आवश्यक है। यह भी सोच लिया था कि घर बैठकर उपदेश करने से संसार का पूर्ण उपकार नहीं हो सकता है, इसलिए द्वेष, ईर्ष्या, बैर, विरोध आदि की प्रचण्ड आग से जलती हुई सृष्टि को ईश्वर के अमृत नाम की वर्षा द्वारा शांति प्रदान करने के लिए आपने सन् १५५४ में देशाटन आरम्भ कर दिया।

राजयोगी श्री गुरूनानक देवजी की चार यात्राएं (उदासियां) प्रसिद्ध हैं। एक बढ़ई भाई लालो के घर रहकर छूत–अछूत का भ्रम दूर किया। गुरूनानक जी का उपदेश करने का ढंग विचित्र तथा नवीन था। वे सरल सहजता से उपदेश करते थे जो बिजली की तरह असर करता था। मक्का पहुँचकर गुरुजी काबे की ओर पैर करके सो गए। जब इस कृत्य से काजी क्रुद्ध हुआ तो गुरुजी ने कहा काजी जी जिधर अल्लाह का घर न हो मेरे पैर उधर कर दीजिए। कहते हैं काजी जी ने उसके पैर जिधर को करे काबा भी उधर ही फिर गया।

आपकी उच्चावस्था से उपदेशों के द्वारा बाद में उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। उस दिन से लोगों ने उन्हें गुरु के रूप में स्वीकार कर लिया। वे शिष्य सिक्ख कहलाए।

उस समय नानक जी के लिए भजन कीर्तन आज भी यहाँ के सिक्ख लोगों के घरों में गाये जाते हैं। बाद में उन सभी उपदेशों को तथा अन्य महान संतों की वाणी एकत्रित करके एक ग्रंथ बनाया गया। गुरु गोविन्द सिंह जी की आज्ञा से उसी ग्रंथ को गुरुग्रंथ साहिब कहते हैं। गुरुग्रंथ साहिब ही सिक्खों का अत्यंत पवित्र ग्रंथ है।

–भवानी मंडी (राज.)

सजीव किसे कहेंगे?

हम कई बार 'सजीव' शब्द बोलते हैं या सुनते हैं ..
पर सजीव की वास्तविक पहचान क्या है?
हम सजीव कहेंगे किसे? हम इंसान सजीव क्यों कहे जाते हैं?
जो जीवित है सजीव है
और जीवित वह है जो.....
कोशिकाओं से बना है,
पैदा होता है और
विकसित होता है..
पुनर्उत्पादन करता है...
ऊर्जा पाता है और
उसका उपयोग करता है,
पर्यावरण का हिस्सा है
और उससे जुड़ा है....
इंसान, जीव-जंतु,
पेड़-पौधे सभी सजीव हैं।
क्योंकि इनमें ये सभी
खासियतें हैं।

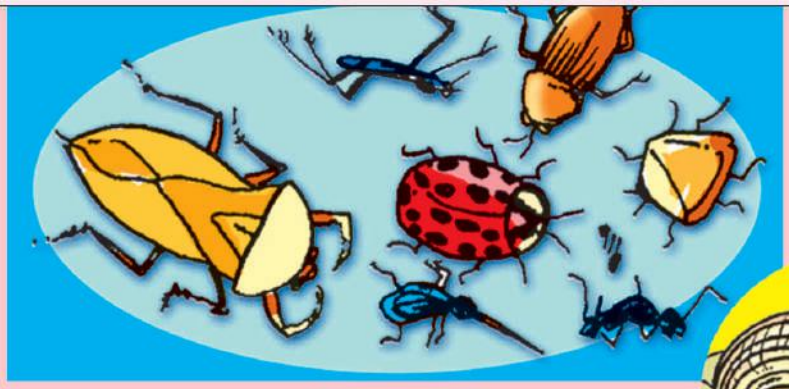

सजीव उभयचारी, पक्षी, स्तनपायी, रेंगने वाले, कीट, मछली, शंख या कड़े खोल वाले, आदिम या अन्य प्रजाति के प्राणी भी हैं। सभी सजीवों में चेतना यानी महसूस करने की ताकत होती है। पेड़-पौधे, हम आपकी तरह सजीव हैं।

अधिकतर सजीव महसूस करने के साथ देखने का गुण भी रखते हैं।

सजीवों की अधिकतर प्रजातियां लिंग पर आधारित होती है। ये नर और मादा दो श्रेणी में होते हैं। लेकिन यह कुछ मामलों में सच नहीं है। कई पौधे और कीड़े ऐसे हैं जिनका कोई लिंगीय वर्गीकरण नहीं है या जिनमें एक ही प्राणी में नर और मादा दोनों शामिल हैं। इन्हें उभयलिंगी कहा जाता है। कई तो ऐसे भी हैं जो अपने एक ही जीवन में समय अनुसार नर या मादा के रूप में बदलते हैं।

क्रॉस ब्रीड के रूप में भी कई प्रजाति जन्म लेती हैं। जैसे मादा घोड़ा और नर गधा के मेल से खच्चर का जन्म होता है।

समाप्त

मनु की रामलीला

प्रसंग

गोपाल माहेश्वरी

नाना साहब पेशवा के राज्य में बिठूर में रामलीला का मंचन तो प्रतिवर्ष ही होता था। लेकिन इस बार 'मनु' (झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम) ने निवेदन किया कि रामलीला के मंचन का अवसर महिलाओं को मिले। नाना साहब ने सहर्ष स्वीकृति दे दी। उत्साहपूर्वक अभ्यास आरम्भ हो गया। एक दिन अभ्यास करते हुए 'मनु' ने देखा एक लड़की बड़ी उत्सुकता से पर छुप–छुपकर अभ्यास देख रही है। मनु उसे हाथ पकड़ कर सामने ले आई और पूछताछ की। उस ने बताया कि वह भी रामलीला में भाग लेना चाहती है। ''तो आओ न? तुम भी कोई चरित्र निभाओ। रामलीला में तो कई लोगों की आवश्यकता होती है।'' ''लेकिन मैं कैसे कर सकती हूँ रामलीला? मैं तो अछूत हूँ।'' मनु ने हँसकर गले लगाया और अपनी मण्डली में उसे शबरी का चरित्र अभिनय करने को कहा।''

शबरी प्रसंग के मंचन पर दर्शकों में कई शबरी का चरित्र करती इस बालिका को देखा तो उसे पहचान कर असहज हो गए विरोध के स्वर उठने लगे तो मनु ने ओजस्वी वाणी में निःशंक भाव से समझाया। ''माता शबरी तो स्वयं अस्पृश्य समझी जानी वाली जाति की थी पर श्रीराम ने उनके झूठे बैर खाए, उन्हें सम्मान दिया। बताओ शबरी के बिना रामलीला पूरी हो सकती है क्या? अरे! जब भगवान जाति पांति छुआछूत का भेद नहीं करते तो उने आदर्श मानने वाले, हम मनुष्यों को यह भेदभाव करने का अधिकार किसने दिया?''

सभा निरुत्तर थी। रामलीला आरंभ रही। मनु ने केवल रणक्षेत्र में तलवारें चलाना ही न सीखा था वह समाज में व्याप्त बुराईयों एवं गलत मान्यताओं पर भी सशक्त प्रहार करने वाली सामाजिक वीरांगना भी थी।

– इन्दौर (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९ के लिए **यात्रा वृत्तान्त** की पुस्तक हेतु प्रदान किया जाना निश्चित हुआ है। इसकी **पुरस्कार निधि ५०००/– पाँच हजार** रुपए है।

इस हेतु आपकी प्रकाशित कृति (पुस्तक) की तीन प्रतियाँ **३१ मार्च २०२०** तक निम्नांकित पते पर सादर आमंत्रित हैं।

प्रविष्टि भेजने का पता –

माया श्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

देवपुत्र बाल मासिक, ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

।। स्तंभ ।।

स्वयं बनें वैज्ञानिक : फूले हुए गुब्बारों को दीवार पर चिपकाना

आलेख
डॉ. राजीव तांबे

अनुवाद
सुरेश कुलकर्णी

बाल मित्रो!

हर समय हम नया प्रयोग करने के लिए तैयार रहते हैं। चलो इस बार हम दीवार पर फूला हुवा गुब्बारा चिपकाते हैं। चलो...चलो....

सामग्री

३ गुब्बारे

१ मीटर धागा

ऊनी स्वेटर या शॉल

चलो तो अपना प्रयोग शुरु करते हैं।

पहले हम बलून में हवा भरते हैं और उसको धागे से बांध देते हैं। अब इन बलून को ऊनी स्वेटर या शॉल पर खूब रगड़ते हैं और उन गुब्बारों को दीवार के पास ले जाते है तो क्या देखते हैं, सब गुब्बारे थोड़ी देर दीवार पर चिपक जाते हैं और कुछ देर बाद गिरते हैं।

घर में जितनी दीवारें हैं उस पर हम इन गुब्बारों को चिपकाते हैं चलो गुब्बारे चिपकाना प्रारंभ करें।

यह क्यों होता है?

इस सवाल का हल बता देते हैं। जब रबड़ का गुब्बारा ऊनी स्वेटर या शॉल पर रगड़ खाता है तो उसमें ऊनी कपड़ों पर स्थित इलेक्ट्रॉन अर्थात विद्युतकण गुब्बारे की सतह पर चिपकते हैं और गुब्बारा ऋण आवेशित हो जाता है और जब उसे दीवार की तरफ हम ले जाते हैं तो वह अपने आप आकर्षित करता है। मतलब यह कि दो विजातीय विद्युतकणों का आकर्षण उसे वह क्रिया करने को प्रेरित करता है। यहाँ विषमभार आकर्षण यह नियम कार्य करता है। कुछ देर बाद यह गुब्बारा इसलिए गिर जाता है कि उसमें समाहित इलेक्ट्रॉन्स वायु या हवा में समाहित हो जाते हैं।

अब आप यह भी करके देख लो

ऊनी स्वेटर या शॉल के अलावा किस चीज पर रगड़ खाने के बाद गुब्बारा दीवार पर चिपकेगा? यह आपको देखना है।

विद्युत भार से युक्त यह गुब्बारे अगर पास पास चिपकाये तो क्या होगा? और किन किन जगह यह गुब्बारे चिपक जाते है इस बात का आप पता लगाइये।

● पुणे (महा.)

|| २६नव. संविधान दिवस ||

सिक्के के दो पहलू

कहानी

गोविन्द भारद्वाज

प्रार्थना समाप्त हाते ही विवेक ने रमेश से पूछा, ''रमेश! कल तुम विद्यालय आये थे?'' हाँ मैं तो आया था... शायद तुम नहीं आए थे।'' रमेश ने विवेक से कहा। विवेक ने जवाब दिया, '' हाँ मित्र! कल मैं विद्यालय नहीं आया। दरअसल... मुझे डर था कि सामाजिक अध्ययन पढ़ाने वाले वर्मा आचार्य जी ने परसों जो पाठ पढ़ाया था। उसके बारे में कुछ पूछेंगे।'' इसमें डर वाली बात क्या है। जो पढ़ाया जाए वो हमें याद करना चाहिए। वे भी तो हमारे भले के लिए प्रश्न पूछते हैं। और वैसे भी कल...।''रमेश बोला। ''कल क्या?'' विवेक ने बड़ी उत्सुकता से पूछा। रमेश ने हँसते हुए कहा, ''वर्मा आचार्य जी कल छुट्टी पर थे। शायद वे आज उसी पाठ के बारे में पूछेंगे।'' यह सुनकर विवेक का मुँह लटक गया। दरअसल विवेक पढ़ाई में बहुत कमजोर था। इसलिए उसे शिक्षकों से डाँट पड़ती रहती थी।

थोड़ी ही देर में वर्मा जी कक्षा में आ गए। उनको देखकर बच्चे कुछ सोच में पड़ गए। रमेश ने कहा, ''आचार्य जी! आज परसों जो पाठ पढाया था उसकी तैयार कर के आए हैं हम लोग।'' ''हम लोग!! ये क्यों नहीं कहता कि सिर्फ मैं ही तैयारी से आया हूँ।'' विवेक मन ही मन बड़बड़ाया। वर्मा जी ने कहा, ''बच्चो! कल मैं छुट्टी पर था इसलिए आज उसी पाठ पर ही चर्चा करेंगे। जो मैंने तुम को पढ़कर आने को कहा था।'' ''जी आचार्य जी!'' कुछ बच्चों ने एक स्वर में कहा। ''आचार्य जी पाठ का नाम था **'मूल अधिकार और मूल कर्तव्य'**। रमेश ने उन्हें पुस्तक देते हुए कहा। वर्मा जी ने तुरंत कहा, ''हाँ भाई! कौन बताएगा मूल अधिकार और मूल कर्तव्य के बारे में?'' उसी समय कक्षा में सुनील नाम का लड़का खड़ा हुआ। उसने पूछा, ''आचार्य जी! मैं इस पाठ को पढ़ रहा था तो एक जगह लिखा हुआ था मूल अधिकार व मूल कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसका मतलब क्या होता है?'' बहुत अच्छी बात पूछी है सुनील तुमने।'' वर्माजी ने सुनील को शाबासी देते हुए कहा। इस पर विवेक ने धीरे से कहा, ''शाबास सुनील। तुम ने आचार्य जी को उलझा दिया। अब वे प्रश्न नहीं पूछेगे बल्कि सिक्के के दो पहलू को समझाएंगे।'' आचार्य जी ने पुस्तक के पन्ने पलटते हुए कहा ''देखो बच्चो! अपने संविधान में भारत के प्रत्येक नागरिक को मूल अधिकार दिए है साथ ही मूल कर्तव्य भी बताए हैं।'' ''आचार्य जी! कौन कौन से मूल अधिकार दिए हैं?'' विवेक ने साहस जुटाते हुए पूछा। ''तुम परसों विद्यालय नही आए थे क्या? मैंने पढ़ाया भी था और समझाया भी था।'' वर्मा जी ने पूछा। विवेक गर्दन झुकाते हुए उत्तर दिया। ''क्षमा करें। मेरी समझ में उस दिन कुछ भी नहीं आया।'' ''कोई बात नहीं फिर से बता दूँगा।'' वर्मा जी ने कहा। सुनील की तरफ देखते हुए वर्मा जी ने कहा, ''सुनील! संविधान ने हमें स्वाभिमान से जीने के लिए स्वतंत्रता, समानता, धार्मिक स्वतंत्रता व शोषण के विरुद्ध अधिकार दिए है।'' ''हाँ आचार्य जी! हमें शिक्षा व संस्कृति तथा संवैधानिक उपचारों का भी तो अधिकार दिया है।'' रमेश ने बीच में टोकते हुए कहा। ''हाँ रमेश! तुम ने ठीक कहा। ये ही हमारे संविधान की बहुत बड़ी विशेषता है। डॉ. अम्बेडकर जी ने इन्हें संविधान की आत्मा कहा है।'' वर्मा जी ने बताया। ''वाह! जी ये तो बहुत अच्छी बात है। जो जैसे चाहे रह सकता है। मौज मस्ती कर सकता है।'' सबसे पीछे बैठे मोहित ने हँसते हुए कहा। इस पर वर्मा जी ने उन्हें समझाते हुए कहा, ''बेटे! हमें केवल अधिकार

मौज मस्ती करने के लिए नहीं दिए गये हैं बल्कि देश के प्रति हमारे कुछ कर्तव्य भी बताएं हैं।'' ''कौन से कर्तव्य?'' सुनील ने पूछा। वर्मा जी ने विस्तार से समझाते हुए कहा, ''बेटा! देश के संविधान में लगभग ग्यारह मौलिक कर्तव्य भी बताए हैं।'' जैसे देश के राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत व देश के तिरंगे का सम्मान करना चाहिए। सबको आपस में मिलजुल के रहना चाहिए। सभी धर्मों का आदर करना चाहिए। पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। देश के कानूनों का पालन करना चाहिए आदि...आदि....।'' ''आचार्य जी सिक्के के दो पहलू से इनका क्या संबंध?'' रमेश ने तुरंत पूछा। ''अरे हाँ वही तो अब समझाने जा रहा हूँ तुमको। जिस देश में मूल अधिकार दिए हैं तो वो देश मूल कर्तव्य भी देता है। जैसे तुम्हें पढ़ने का अधिकार है तो विद्यालय के नियमों का पालन करना तुम्हारा कर्तव्य है।'' ''पुस्तकालय से पुस्तकें लेने का अधिकार है तो उन पुस्तकों को संभालकर रखना व समय पर जमा कराना तुम्हारा कर्तव्य है।'' वर्मा जी ने कहा। सुनील ने खड़े होते हुए कहा, ''आचार्य जी जैसे हम अपने माता-पिता से कुछ भी माँग करते हैं वो हमारा अधिकार है लेकिन उनकी आज्ञाओं का पालन करना और उनका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है।'' बिलकुल ठीक समझे हो तुम। जहाँ अधिकार है वहाँ कर्तव्य भी हैं। ये एक दूसरे के पूरक है। एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं होता। जैसे कोई सिक्का दोनों तरफ से साफ सुथरा व खरा (प्रमाणिक) होगा तो ही वो बाजार में चलेगा। लेकिन एक तरफ से भी वह खोटा हुआ तो बिलकुल भी नहीं चलेगा। इसलिए कहते है कि एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं मूल अधिकार और मूल कर्तव्य । ''वर्मा जी ने बड़े अच्छे ढंग से समझाते हुए कहा। विवेक ने कहा, ''धन्यवाद आचार्य जी! आज मुझे सब कुछ अच्छी तरह से समझ आ गया। आचार्य जी! मैं भी सिक्के के दो पहलू का मतलब समझ गया। ''सुनील ने मुस्कुराते हुए कहा। ''चलो मेरा समझाना सार्थक हुआ।'' वर्मा जी ने भी हँसते हुए कहा। तभी कालांश बदलने की घण्टी बज गयी।

– अजमेर (राज.)

भारतीय संविधान में वर्णित समस्त नागरिकों के मूल कर्तव्य

- *संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।*
- *स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे व उनका पालन करें।*
- *भारत की प्रभुता, एकता व अखण्डता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण बनाए रखें।*
- *देश की रक्षा करें व आह्वान किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।*
- *भारत के सभी लोग समरसता और सम्मान एवं मातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा, प्रदेश या वर्ग के भेदभाव पर आधारित न हो, उन सभी प्रथाओं का त्याग करें जो महिलाओं सम्मान के विरुद्ध हो।*
- *हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझें और उसका परिरक्षण करें।*
- *प्राकृतिक पर्यावरण जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी, वन्यप्राणी आदि आते हैं की रक्षा व संवर्द्धन करें तथा प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखें।*
- *वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद व ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।*
- *सार्वजनिक सम्पति को सुरक्षित रखें व हिंसा से दूर रहें।*
- *व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में सतत् उत्कर्ष की ओर बढ़ने का प्रयास करें। जिससे राष्ट्र प्रगति करते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाईयों को छू ले।*
- *छः वर्ष से चौदह वर्ष आयु वाले अपने या प्रतिपाल्य बच्चे को शिक्षा के अवसर प्रदान करें।*

देश और राजधानी

आलेख

श्रीधर बर्वे

कुछ देशों के नाम और राजधानियों के नाम हमारे लिए अटपटे और विचित्र हो सकते हैं, परन्तु सम्बन्धित देशों की भाषा में उनका कोई अर्थ अवश्य होता होगा। इन अटपटे नामों को हम केवल मनोरंजक जानकारी के तौर पर ही लें। ऐसे ही जैसे कि हम ऐसे गाने सुनते हैं जिनमें कुछ शब्द अर्थहीन होते हैं किन्तु वे हमारा मनोरंजन करते हैं, जैसे ''लारी लारी लप्पा लाई रखदा अड़ी टप्पा, अड़ी टप्पा लाई रखदा'', ''गापूची, गापूची, गम गम'' ''अकड़म, बकड़म बम्बे बो–अस्सी नब्बे पूरे सौ'' आदि।

इन्हीं दिये हुए नामों की तुकबन्दी कर देशों और राजधानी के नाम याद किए जा सकते हैं।

देश	राजधानी
बुरकिना फासो	उआगाडुगु
कैमरून	याऊण्डे
आइवरीकोस्ट	यामुसुकरते
अंगोला	लुआण्डा
मुगाण्डा	कमाला
माली	बामाको
लेसोथो	मसेरु
मादागास्कर	अन्तानानारिवो
मंगोलिया	उलान बातोर
उत्तरी कोरिया	प्योंग मांग
होण्डुरास	तेगुसिगल्या
किरीबाती	तरावा
मार्शलद्वीप	दलप उलिगा कम्पाले
हवाईद्वीप (सं. रा.)	होनोलुलू
टोंगा	नुकू अलोफा
तुवालू	फूनाफूटी
वनुआतू	पोर्ट विला
समोआ	आपिया
समोआ (अमेरिकन)	पागो पागो

- इन्दौर (म.प्र.)

मटकी और बटकी

मूल मराठी
नटवर पटेल

अनुवाद
डॉ. हुदराज बलवाणी

एक थी मटकी। मटकी यानी पानी का छोटा सा घड़ा। माँ उसे ''मटकी'' कहती थी।

छुट्टियाँ पूरी हुई। विद्यालय खुला। अब तक वर्षा नहीं हुई थी। गरमी बहुत थी। मैंने पिताजी से कहा, ''मेरी लिए एक पानी की बोतल (वाटर बैग) ले आइए।''

और आज मुझे पानी की बोतल मिल गई। मटकी से थोड़ी छोटी थी। इसलिए मैंने उसका नाम रखा ''बटकी''। बटकी यानी ठिगनी, नाटी। बटकी में पानी ठंडा रहता था।

मटकी और बटकी
बटकी और मटकी
मेरी पसंद बटकी
माँ की पसंद मटकी।

पिताजी से पूछा, ''आपको दोनों में से क्या पसंद है?''

पिताजी ने कहा, ''तू''। उत्तर सुनकर मैं हँस पड़ा।

बात यहाँ नहीं अटकी। मेरी बात तो लटकी ही रही। मटकी और बटकी में से कौन सी चीज अच्छी? मटकी या बटकी?

एक बार तो मैंने मटकी से ही पूछा लिया, ''मटकी री मटकी, बता तुम दोनों में से कौन अच्छी?''

मटकी सोच में पड़ गई।

बोली, ''बंटी! मुझे तेरी बात समझ में नहीं आई।''

''देख, तू मुझे पानी देती है और बटकी भी पानी देती है। लेकिन बटकी में तेरे से अधिक ठंडा पानी होता है, होता है कि नहीं?''

बात सुनकर मटकी बोली, ''बंटी! क्या तुम यह कहना चाहते हो कि बटकी मुझसे अच्छी है?''

मैं मुस्कराने लगा। मैं यही तो कहना चाहता था।

मटकी फिर बोली, ''बंटी! हम एक काम करते हैं। कल सुबह मुझमें और बटकी में तुम पानी भर देना और शाम को तुम दोनों में से पानी पीकर देखना। फिर बाद में तुम ही इसका उत्तर देना।''

मुझे मटकी का सुझाव अच्छा लगा। मुझे बटकी पर पूरा भरोसा था। मैंने बटकी से यह बात

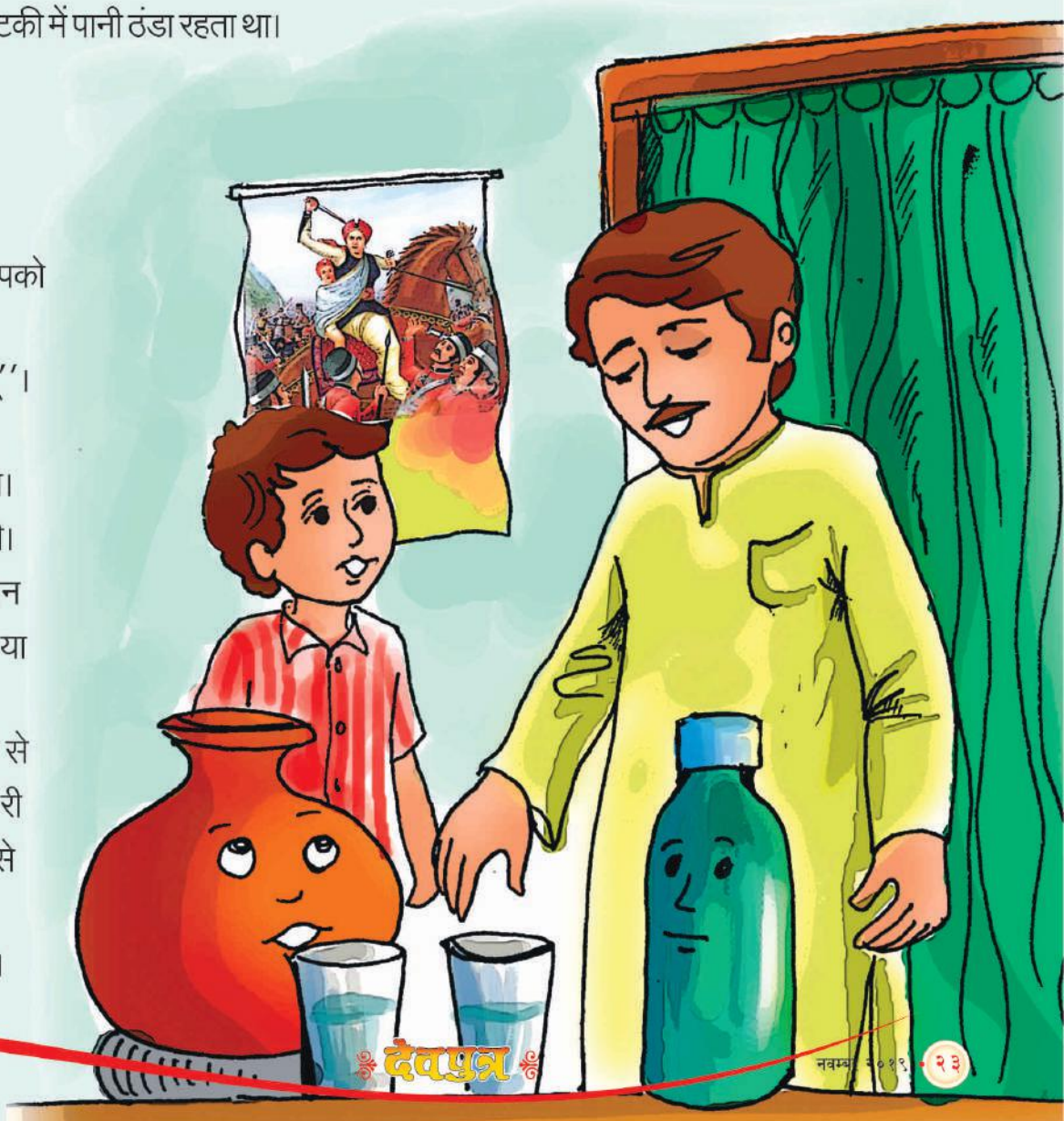

कही तो वह प्रसन्न हो गई।

दिन पूरा हुआ। सुबह हुई। मैंने फ्रीज में से ठंडा–ठंडा पानी बटकी में भर लिया। ऊपर से बर्फ के कुछ क्यूब भी डाल दिए। फिर मटकी से पूछा, ''मटकी, तेरे लिए मैं क्या कर सकता हूँ? बोल, फ्रीज का ठंडा पानी तुझ में भर दूँ और बर्फ के टुकड़े भी डाल दूँ?''

''नहीं नहीं...ऐसा मत करना।'' मटकी चिल्लाई।

''तो फिर?''

''मुझ में तुम नल का पानी भर दो।''

मैंने कहा, ''नल का पानी तो गरम होता है।''

''भले...वही भर दो।''

मुझे मटकी की मूर्खता पर हँसी आ गई।

गरम पानी? इससे क्या होगा? इसकी मर्जी है तो ऐसा ही सही। मैंने उसमें नल का पानी भर दिया।

शाम हुई तो मैं मटकी के पास आया और उसका हाल पूछा।

मटकी बोली, ''मैं ठीक हूँ बंटी...! अब दो ग्लास ले आओ। एक में बटकी वाला पानी भरो और दूसरा में मेरा। फिर पिताजी को बुलाओ।''

''पिताजी को क्यों? वह क्या करेंगे?'' मुझे आश्चर्य हुआ।

''वह फैसला करेंगे। जो निर्णय होगा वह सुनाएँगे।''

मैंने ऐसा ही किया। पिताजी अपने कमरे में बैठकर लिखने का कोई काम कर रहे थे। मैं उन्हें बुलाकर ले आया।

पिताजी ने पूछा, ''क्या काम है?''

''आपको निर्णय सुनाना है।''

''निर्णय? किसी के साथ झगड़ा हुआ है क्या?''

''नहीं नहीं... कोई झगड़ा नहीं हुआ। देखिए, एक ग्लास में बटकी में से पानी निकालिए और दूसरे ग्लास में मटकी में से। फिर मुझे बताइए कि कौन सा पानी ज्यादा ठंडा है।''

पिताजी ने दोनों ग्लासों में पानी भरा, पीकर देखा और फिर अपना फैसला सुनाया, ''मटकी का पानी ज्यादा ठंडा है।''

पिताजी ने दोनों ग्लासों में पानी भरा, पी कर देखा, और फिर अपना निर्णय सुनाया, ''मटकी का पानी अधिक ठण्डा है।''

मुझे पिताजी की बात पर विश्वास नहीं हुआ इसलिए मैंने उठकर दोनों ग्लासों को छुआ तो सचमुच मटकी का पानी ठंडा लगा। मुझे बात समझ में नहीं आ रही थी। पूछा, ''ऐसा क्यों हुआ?''

पिताजी पहले तो हँस पड़े। फिर बोले, ''तू भी बुद्धू है बुद्धू।''

''लेकिन पिताजी ऐसा क्यों हुआ? मुझे समझाइए न!''

फिर पिताजी ने समझाया, ''देख बंटी, बटकी में पानी भरेंगे तो वह कुछ घंटों तक ही ठंडा रहेगा। फिर वह गरम होता जाएगा। लेकिन मटकी वाला पानी, जैसे–जैसे समय बीतता है ठंडा होता जाता है उसका कारण यह है कि मटकी की सतह पर अतिसूक्ष्म छिद्र होते हैं। इन छिद्रों से पानी का वाष्पोत्सर्जन होता रहता है और जिस सतह पर वाष्पोत्सर्जन होता है, जिससे मटकी की दीवारें ठंडी रहती है और इसी के चलते मटकी का पानी ठंडा रहता है।''

''मैं बड़े अचरज के साथ पिजी की बात सुनता रहा। पिताजी ने घर बैठे–बैठे विज्ञान की बात समझा दी। मैंने कहा, ''पिताजी आप महान है। मटकी अब मुस्करा रही थी।

मटकी और बटकी
बटकी और मटकी
ठंडे पानी की बात
बस यहाँ पर अटकी!

– अहमदाबाद (गुज.)

एक पाती बच्चों के नाम

पत्र

डॉ. प्रभा पंत

मेरे प्यारे बच्चो!

स्थानान्तरण हो जाने के कारण मुझे अनायास ही तुमसे दूर जाना पड़ा। आज जब अलमारी संवार रही थी तो वह बक्सा मेरे हाथ लगा, जिसमें मैंने तुम्हारे पत्र संजोकर रखे थे। कॉपी का फटा वह पन्ना जिस पर तुम अपने मन की उलझन लिखकर, कक्षा से बाहर जाते अपने सहपाठियों की नजरों से बचते–बचाते चुपचाप मेरी मेज पर रखकर चले जाते थे...आया याद? आधे–अधूरे वाक्यों में कही गई तुम्हारे मन में उथल–पुथल मचाती बातें, पूरी तरह मुझ तक पहुँच जाया करती थीं। अगले दिन कक्षा में आकर बिना तुम्हारा नाम लिए, जब मैं पाठ पढ़ाते हुए तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर दे दिया करती थी तो प्रसन्नता से तुम्हारी आँखें चमक उठती थीं। तुम्हारे नन्हें–नन्हें हाथों से मुड़े ये अनमोल पत्र आज भी मुझे शिक्षक के प्रति विद्यार्थियों के अटूट प्रेम और विश्वास की याद दिला रहे हैं। इसलिए मैंने सोचा, क्यों न मैं भी तुम्हें पत्र लिखकर बातें करूँ।

तुम्हें पता है, तुम कितने प्यारे हो? हर घर–आँगन और संसार में तुमसे ही रौनक है। तुम नहीं जानते कि मुझे तुम्हारी प्यारी तोतली बातें, तुम्हारी शरारतें, तुम्हारा नटखटपन, तुम्हारा हँसना, तुम्हारा रोना सब बहुत... प्यारा लगता है? लेकिन, तुम्हारा जिद करना किसी को भी अच्छा नहीं लगता। जानते हो क्यों? क्योंकि, अभी तुम उस नन्हें से पौधे की तरह हो, जो नहीं जानता उसके लिए क्या सही है और क्या गलत...क्या उचित है...क्या अनुचित।

पौधा देखा है न तुमने? अगर नहीं देखा तो माँ से पिताजी से, दादी से, भैया से, दादा–दादी से या नाना–नानी से, यानि जो भी तुम्हारे आस–पास हो उससे कहो वह तुम्हें पौधा दिखाए। आया समझ?

हाँ तो मैं क्या कह रही थी...? मैं कह रही थी...अभी तुम एक नन्हें पौधे की तरह कोमल और छोटे हो। पता है...पौधे तुम्हारी ही तरह बहुत प्यारे होते हैं, लेकिन कोमल होने के कारण गमले में या घर की बगिया में लगाया गया पौधा, तेज धूप में मुरझा जाता है और तेज बारिश में सड़कर गल भी जाता है। कभी –कभी कुछ बुद्धू बच्चे उसे उखाड़ भी देते हैं, क्योंकि तुम्हारी तरह समझदार नहीं होते हैं न इसलिए। जानते हो और क्या–क्या होता है नन्हें पौधे के साथ? उसे गाय, भैंस, बकरी खा जाती हैं, कभी–कभी तो गलती से बड़े लोग भी उसे पैरों तले कुचल देते हैं और वह बड़ा होकर पेड़ नहीं बन पाता।

इसीलिए, पौधों की सुरक्षा करनी पड़ती हैं, बताऊँ कैसे? जैसे माँ आपको दूध पिलाती हैं, खाना खिलाती हैं सर्दी और गर्मी के मौसम में अलग–अलग तरह के कपड़े पहनाती हैं, दौड़कर सड़क पार करने से रोकती हैं, बार–बार सीढ़ियाँ चढ़ने और उतरने पर तुम्हें टोकती हैं, खुली हुई छत पर जाने से और वहाँ खेलने से मना भी करती हैं। करती हैं न? तुम्हारे पिताजी...चलो तुम मुझे बताना तुम्हारी माँ और पिताजी तुम्हारे लिए क्या–क्या करते हैं, ठीक है?

इसी तरह जिन लोगों के घर में पौधे होते हैं, उन्हें अपने घर में लगे पौधों की आवश्यकताओं के बारे में मालूम होता है। वह लोग पौधों की आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक पौधे में पानी और खाद डालते हैं, गमले में या बगीचे में लगाकर, कभी धूप में तो कभी छाया में

रखकर उनकी देखभाल करते हैं। तभी तो वे पौधे धीरे–धीरे बढ़ते जाते हैं। गमले में या क्यारियों में लगे, नन्हें–नन्हें पौधों में फूल खिलने लगते हैं, और जमीन पर लगाए गए पौधे एक दिन बहुत बड़ा पेड़ बन जाते हैं। तुम्हें मालूम हैं, नन्हा सा पौधा पेड़ बनकर हमें क्या–क्या देता है? वह हमें फूल, फल, बीज, लकड़ियाँ और जीवित रहने के लिए ऑक्सीजन भी देता है।

मैंने तुम्हें बाल कहानी और कविताओं की जो पुस्तकें दी थीं, इन पुस्तकों में लिखी कहानियाँ और कविताएँ पढ़कर तुम और भी बहुत सी बातें सीख सकते हो। तुम इन्हें पढ़ना, तुम्हें जो भी कविताएँ और कहानियाँ अच्छी लगें, उन्हें याद करके अपने मित्रों को तथा अपने भाई–बहनों को सुनाना। जिन लोगों से तुम बहुत प्यार करते हो, उनके जन्मदिवस पर उपहार में... मतलब उपहार स्वरूप उन्हें अपनी मनपसंद कहानी, कविता, नाटक या किसी महापुरुष की जीवनी की पुस्तक भेंट करना। करोगे ना...?

अगर तुम्हारा मन करे तो तुम भी कविता या कहानी लिखना और लिखकर, मेरे लिए भिजवा देना। कैसे...? डाक से...। जैसे चिट्ठी लिखकर भेजते हैं। जब तुम कविता और कहानी पढ़ोगे और लिखने का प्रयास करोगे तो तुम्हें नए–नए शब्द याद होंगे, नई बातें पता चलेंगी... और लिखने से तुम्हारी लिखावट भी बहुत सुन्दर हो जाएगी। आया समझ...?

देखो! अगर तुम्हें अपनी किसी बात का उत्तर न मिले या तुम्हारे मन में कोई भी प्रश्न आए तो तुम मुझे पत्र में लिखकर भेज देना, अपनी प्रिय पत्रिका देवपुत्र के पते पर। मैं तुम्हारे हर प्रश्न का उत्तर दूँगी।

तुम्हारी
विद्यालय वाली दीदी
– हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

बिल्ली मौसी

बाल प्रस्तुति
वर्षा प्रजापति

बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी,
बोलो कहाँ रहीं इतने दिन?
मैं तो दिल्ली शहर गई थी,
करने मंत्री जी के दर्शन।

बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी
तुमने क्या फिर वहाँ किया?
कुर्सी के नीचे थी चुहिया,
मैंने उसको डरा दिया।।
– भैंसोदा (म.प्र.)

फूल

बाल प्रस्तुति
राधिका ठाकुर

महके इनसे क्यारी–क्यारी,
इन पर दिखती तितली प्यारी।
इनका रंग सभी को भाता,
फूलों में जीवन मुस्काता।
– ग्वालियर (म.प्र.)

अनार के पेड़

कहानी

बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'

गोपाल के बगीचे में दो अनार के पेड़ थे। जो कई साल से बेकार खड़े थे। वे न फूलते थे न फलते थे। कई बार गोपाल ने अपनी पत्नी से कहा ''इन अनार के पेड़ों को अपने बगीचे में रखने से क्या फायदा तुम कहो तो इसे काट कर फेंक दें।''

गोपाल की बात सुनकर उसकी पत्नी बोली ''मैं कब रोक रही हूँ काटने से आज ही काट डालो बिना फल देने वाले पेड़ लगा कर हम क्या करेंगे।'' पत्नी की बात सुनकर गोपाल बोला ''आज नहीं कल इन्हें काट कर फेंक देंगे।''

उस दिन गोपाल बगीचे की साफ सफाई कर के घर लौट आया।

गोपाल के जाते ही अनार के पेड़ रोने लगे। अनार के पेड़ों की रोने की आवाज सुनकर पास खड़े आम, अमरूद, बेल, जामुन, नीबू के पेड़ सभी एक साथ अनार के दोनों पेड़ों से पूछने लगे। अनार भाईयो! तुम आज रो क्यों रहे हो?''

सभी पेड़ों की बात सुनकर अनार ने बोला, ''मैं न फूलता हूँ न फलता हूँ। इसलिए कल हमारे बगीचे के मालिक हमें काट कर फेंक देंगे। आज हमारी जिन्दगी का अंतिम दिन है। कल मैं इस संसार से अंतिम प्रणाम करके चला जाऊँगा। यही सोच कर हम दोनों रो रहे हैं।'' दोनों अनार के पेड़ की दुःख भरी बातें सुनकर सभी पेड़ अनार के पेड़ों को समझाते हुए बोले '' तुम दोनों चुप हो जाओ कल जब हमारे मालिक बगीचे में आएंगे तो हम सब उनसे तुम्हें न काटने की प्रार्थना करेंगे। हमारे मालिक अवश्य हमारी बात मान जाएंगे और तुम्हारी जान बच जाएगी।''

इतना कह सभी पेड़ चुप हो गए।

अगले दिन गोपाल जैसे ही बगीचे में अनार के पेड़ों को काटने के कुल्हाड़ी ले कर पहुँचा ही था कि बगीचे के सारे पेड़ हाथ जोड़ कर गोपाल से कहने

लगे ''मालिक! हमारी आप से एक प्रार्थना है आप अनार के पेड़ों को न काटिए अनार के पेड़ हमारे मित्र हैं।''

पेड़ों की बात सुनकर गोपाल बोला ''तुम सब कौन होते हो हमें रोकने वाले? मैं भला ऐसे पेड़ों को बगीचे में लगा कर क्या करूँगा जो न फूलते हैं न फलते हैं।'' इतना कहकर गोपाल ने अनार के पेड़ों को काटने के लिए कुल्हाड़ी को हाथ में उठा लिया।

अनार के दोनों पेड़ अपनी मौत को सामने देखकर थर–थर कांपने लगे।

तभी आम के पेड़ ने आगे बढ़ कर गोपाल के हाथ से कुल्हाड़ी छीन कर बोला ''मालिक! पहले मुझे काटिए फिर अनार के पेड़ों को काटिएगा।''

तभी सारे पेड़ एक साथ बोल पड़े ''मालिक! हम सब एक साथ मरना चाहते हैं। हम सब को काट डालिए। हम जीवित रहकर क्या करेंगे।'' पेड़ों की बात सुनकर गोपाल सोच में पड़ गया।

तभी आम का पेड़ गोपाल को समझाते हुए बोला।

''मालिक! हम पेड़ फूल फल दें या न दें, पर शुद्ध हवा जल और छांव तो देते हैं। आपको पता है न पेड़ काटने से पर्यावरण प्रदूषण कितना बढ़ गया है। कितनी तरह की बीमारियाँ पैदा हो गई है हर जगह सूखा पड़ने लगा। जमीन का पानी बहुत नीचे चला गया। शहरों में तो पानी की हाहाकार मच गई है। बरसात नहीं हो रही है।

इन बेचारे पेड़ों को काट कर आप को क्या मिल जाएगा? हम पेड़ एक दूसरे से बातें कर के अपना मन बहलाते हैं। इतना ही नहीं हम पेड़ पक्षियों को शरण देते हैं। भोजन देते हैं। अगर मेरी बात झूठी है तो हम सब को काट डालिए।''

आम के पेड़ की बात सुनकर गोपाल बोल पड़ा ''तुम सब ने तो हमारी आँखें खोल दी अब मैं अनार के पेड़ों को कभी नहीं काटूँगा। इतना कहकर गोपाल आम के पेड़ से अपनी कुल्हाड़ी ले कर वापस घर को लौट गया।

गोपाल के जाते ही अनार के दोनों पेड़ सभी पेड़ों की जय जय कार करने लगे और खुशी से नाचने गाने लगे।

– गोला बाजार (उ.प्र.)

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु वर्ष २०१९ के लिए सभी बाल साहित्यकारों से उनकी प्रविष्टियाँ सादर आमंत्रित हैं।

- इस वर्ष यह पुरस्कार बाल लोककथा के लिए निश्चित किया गया है।
- आप अपनी इस विधा की कोई एक रचना ३१ मार्च २०२० तक अवश्य भेज दें।
- रचना हिन्दी में हो।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' का होगा। जिसे देवपुत्र किसी प्रकाशन संस्थान के सहयोग से भी प्रकाशन की योजना कर सकता है।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाओं को क्रमशः १५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००-५०० रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

प्रविष्टि भेजने का पता -

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

तो फिर..
चित्रकथा-
यह दिव्य सेव है राजन् इसे खाकर आप अमर हो जाएंगे.
राजा को एक साधु ने उपहार दिया.
तभी राजा के मसखरे ने झपट्टा मारकर वह सेव छीना और खा गया.
इस दुष्ट को हाथी के पैरों के नीचे कुचलाकर मार दिया जाए...
पर मैं तो अब अमर हूं राजन्..
बकवास.. मैं नहीं मानता कि एक फल खाकर कोई अमर हो सकता है...
तो फिर सेव खाने के लिए मुझे मृत्युदंड क्यों राजन?..

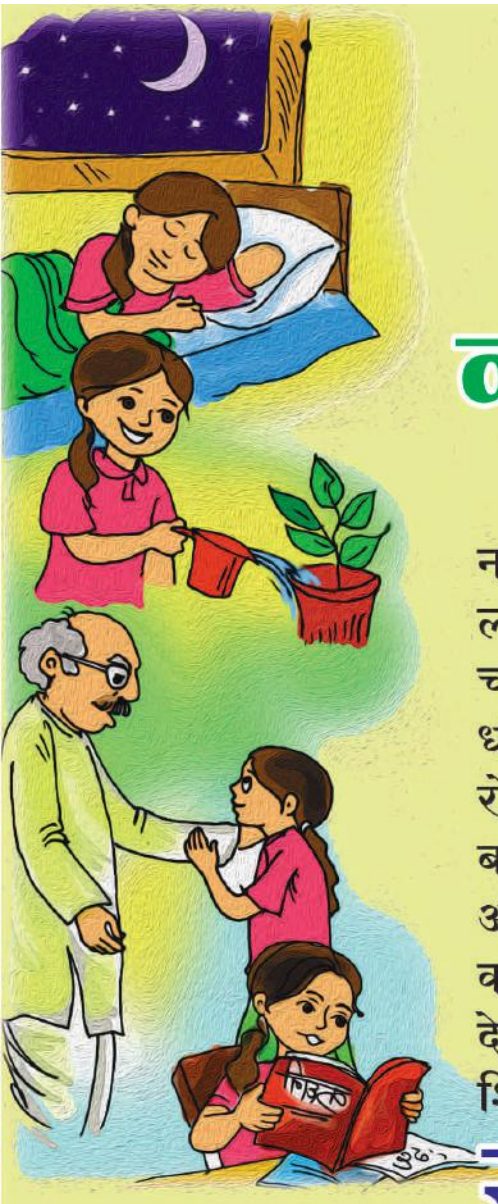

नन्ही मुन्नी

● कुसुम अग्रवाल

नन्ही-मुन्नी बड़ी सयानी
लगती हूँ परियों की रानी।
चबा-चबा कर भोजन करती
धीरे-धीरे पीती पानी।
रोज सुबह जल्दी उठने की
बात हमेशा मैंने मानी।
और रात जल्दी सो जाती
कभी नहीं करती मनमानी
देखभाल पेड़ों की करती
शिक्षक कहते ये हैं दानी।
सभी बड़ों की इज्जत करती
चाची मौसी दादी नानी।
नहीं देखती टी.वी. ज्यादा
पढ़ती कविता और कहानी।
मेहनत करके ही बढ़ने की
मैंने तो है मन में ठानी।
छोटी होकर जिद ना करती
सबको होती है हैरानी।
आँख बचा बस कर लेती हूँ
कभी कभी थोड़ी शैतानी।

– राजसमंद (राज.)

सूना बचपन

● डॉ. पुष्पा पटेल

अम्मा गई है सब्जी लेने दूर बहुत शहर है
दरवाजे सब बंद लगी अब खिड़की पर नजर है
आते होंगे बाबा भी अब गोद मुझे ले लेंगे
फिर से हँसी खुशी से भर जाएगा मेरा घर है

अब आओ चिड़िया रानी तितली तुम भी आओ
खेलेंगे हम छुपक छैया अब न हमें सताओ
अरे भूल सी मैं ही गई हूँ ये सब गाँव की बातें है
पक्के घर में कैसे ये आ सकते हमें बताओ

इसीलिए कुछ हूँ उदास सी खिड़की में मन लगता है
आते जाते मोटर गाड़ी देखके कुछ ये बहलता है
आने दो अब माँ बापू को इस गर्मी की छुट्टी में
कहूँगी दादा दादी पास जाने को मन मचलता है।

– खरगोन (म.प्र.)

कल्पना अनेक :बच्चे

राजा भैया

● प्रो. सी.बी. श्रीवास्तव 'विदग्ध'

राजा भैया सबके प्यारे, उठ जाते गुपचुप भुनसारे
रोते कम हँसते हैं ज्यादा, कहते फिरते दादा दादा।
किलकारी भरते, मुस्काते, तुतलाकर सब बात बताते
जो भी मिले उठा लाते हैं, फिर वह सबको दिखलाते हैं
कागज कलम जहाँ भी पाते, लिखने वहीं बैठ हैं जाते-
हाथ पटकते, मुँह मटकाते जैसे हो कोई गाना गाते।।
कोई बुलाता तो कक जाते, उसको अपने पास बुलाते
चुप हो कभी देखते ऐसा होशियार बच्चा हो जैसा।।
डाल झुकाकर फूल सूंघते, पानी पाकर खेल रचाते
जहाँ खिलौना कोई दिख जाता उठे न उठे उठाया जाता
गाना सुनकर हर्षाते हैं, अपने ढंग से खुद गाते हैं
दूध देखकर मुँह बिचकाते, मौका देख तुरंत लुढ़काते।।
ऊँ ऊँ कहकर हाथ बढ़ाते, गोदी लेने हाथ उठाते
चिड़िया, कौवा, तारा, चंदा रोज देखना इनका धंधा।।
दिखते जैसे कृष्ण कन्हैया, कभी बोलते था-था-थैया
गाना, झूला इनको प्यारे, साथ खेलते रोज हमारे।।
सुनकर लोरी सो जाते हैं, दिनभर सबको भरमाते हैं
इनकी अच्छी बातें सारी, घर में सबको लगतीं प्यारी।।

– नयागाँव (म.प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'बच्चे' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

....
....
....
....
....
....
....

निम्मी को मिली सीख

कहानी

डॉ. निशा मिश्रा

निम्मी अभी शाला से आती ही होगी, यह सोच जल्दी–जल्दी घर के काम को आभा निपटाते हुए जल्दी से रसोई में जाकर दोपहर के भोजन की तैयारी करने लगी। सारा काम समाप्त होने के बाद आभा सोफे पर बैठी ही थी कि दरवाजे की घंटी बजी और बाहर से चिल्लाने की भी आवाज आई ''माँ! जल्दी से दरवाजा खोलो, मुझे लघुशंका जाना है।'' और दरवाजा खुलते ही निम्मी शौचालय की तरफ तेजी से भागी।

शौचालय से बाहर निकलने के बाद माँ ने कहा– ''निम्मी तुम इतनी बड़ी हो गई हो, तुम्हे कुछ समझ में आता भी है कि नहीं।''

''अब क्या हुआ माँ?''

माँ गुस्से से बोली, ''दरवाजे की घण्टी कोई लगातार दबा के रखता है? अगर वो खराब हो गई या उसमें आग लग जाएगी तो...तुम अब १४ साल की हो गई हो। सही–गलत समझा करो जरा बेटा!''

''माँ बस अब भाषण मत देना। मेरा सुनने का मन नहीं है क्षमा कर दो। आगे से गलती नहीं होगी।''

''अच्छा बताओ शर्मा काका की किताब लौटाई कि नहीं, जो पिताजी ने दी थी।''

''पहले मुझे भूख लगी और माँ। खाना दे दो, अपने प्रश्न बाद में पूछ लेना, अच्छा भोजन में क्या बनाया है माँ।''

''दाल, चावल, रोटी और पालक की सब्जी।''

''ओह... माँ क्यों रोज–रोज यही बनाती हो, मुझे नहीं खाना है।'' गुस्सा करती हुई निम्मी ने माँ से कहा और अपने कमरे में चली गई।

माँ ने कहा, ''निम्मी! भोजन कर लो, शाम को कुछ अच्छा बना दूँगी।'' निम्मी गुस्से से कमरे से बाहर निकल बिना मन भोजन करने बैठी और पहला निवाला लेते ही बोली, ''छि...माँ! क्या खाना बनाया है।'' नमक कितना ज्यादा है। माँ आपको तो भोजन भी बनाना नहीं आता है।''

''निम्मी! भोजन में नमक सही है।'' माँ ने कहा, पर निम्मी को भोजन पसंद नहीं आ रहा था, इसलिए उसे उस में बुराई ही बुराई लग रही थी। थाली आगे सरका कर निम्मी कमरे में चली गई, और माँ की आँख भर आई।

निम्मी ने सोने वाले कमरे में जाकर पिताजी को फोन लगाया।

''पिताजी! माँ को भोजन बनाना नहीं आता। माँ ने खाने में कितना नमक मिलाया है।''

पिताजी बड़े ही प्यार से निम्मी से बोले– ''देखो, निम्मी! माँ कितना काम करती है। हमारा कितना ध्यान रखती है। हो जाता है, बेटा कोई बात नहीं।'' ''नहीं...नहीं... पिताजी! माँ रोज ही ऐसे ही भोजन बनाती है। आप आज आते समय बाहर से ही भोजन लाओ, मैं नहीं खाऊँगी यह भोजन।''

''अच्छा...अच्छा, निम्मी! शांत हो जाओ। मैं रात को आते समय बाहर से भोजन लाऊँगा। ठीक है अब तुम खुश हो।'' ''हाँ मेरे प्यारे पिताजी!'' कहते हुए फोन रख दिया।

पिताजी ने माँ को फोन कर सारी बात मालूम की कि निम्मी क्यों इतने गुस्से में है। माँ ने जब सारी बात पिताजी को बतायी तो वे बोले'' तुम चिंता मत करो। निम्मी को प्यार से समझाता हूँ, तुम आज शाम को भोजन मत बनाना।''

माँ ने कहा–''क्या आपको भी लगता है कि मैं अच्छा भोजन नहीं बनाती हूँ।''

''नहीं...नहीं ऐसा नहीं है तुम तो हमारा ध्यान भी रखती हो और स्वादिष्ट भोजन भी बनाती हो। ऐसा कुछ भी मत सोचो।''

माँ को समझाते हुए पिताजी ने फोन रख दिया। शाम को जब पिताजी कार्यालय से आते हैं तो दरवाजे की घंटी की आवाज सुनते ही निम्मी टी.वी. देखना बंद करते हुए दरवाजा खोलती है और निम्मी पिताजी के हाथ से थैला ले लेती है। भोजन का डिब्बा हाथ में न देखकर कहती है, ''पिताजी भोजन कहाँ है?'' रुको, निम्मी थोड़ी साँस तो लेने दो।'' ''ओह हाँ पिताजी!''

जब पिताजी सोफे पर बैठ जाते हैं तो कुछ समय बाद निम्मी पिताजी से फिर कहती है, ''पिताजी बोलो न, क्या हम बाहर खाने जाने वाले हैं। वाह पिताजी...पर पिताजी माँ को बुखार हो गया है और वे सो रही है।'' निम्मी निराश होकर बोली।

पिताजी ने निम्मी से पूछा– ''माँ ने दवाई ली।''

निम्मी बोली– ''हम्म!''

पिताजी ने सोने वाले कमरे में माँ को देखा तो वे सोई हुई थीं। पिताजी ने माँ को नहीं उठाया और बाहर आकर निम्मी से बोले–''निम्मी! माँ तो अब भोजन के लिए बाहर नहीं जा सकती है। एक काम करते हैं, हम मिलकर अच्छा सा भोजन बनाते हैं।''

''हाँ, पिताजी माँ से भी अच्छा भोजना ना!''

''हम्म...'' कहते हुए पिताजी ने कहा– ''तो चलो। आज निम्मी के हाथों से स्वादिष्ट खाना खाएंगे।''

पिताजी और निम्मी भोजन बनाने में लग जाते हैं। भोजन तैयार होने के बाद निम्मी माँ को जाकर कहती है, ''माँ चलो भोजन कर लो। आज मैंने और पिताजी ने भोजन बनाया है।''

माँ कहती है– ''क्या पिताजी आ गए? तुम चलो मैं आती हूँ।''

''नहीं...नहीं माँ पिताजी मेज पर भोजन लगा रहे हैं। आपको बुलाने को कहा है।'' हाथ को खींचते हुए बोली– ''चलो न माँ।''

और माँ बाहर आकर कुर्सी पर बैठती है। तब पिताजी कहते हैं– ''तुम्हारा बुखार कैसा है?''

''ठीक है, माँ ने कहा।

''आप आए और मुझे उठाया भी नहीं।'' पिताजी ने कहा– ''तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं था और तुम सो रही थी, सो मैंने नहीं उठाया।''

''ये देखो, आज निम्मी ने क्या बनाया है...

''आलू मटर की सब्जी, पुलाव, दाल, पराठा।'' तभी निम्मी बड़ी खुश होकर बोली–''माँ देखो भोजन मस्त दिख रहा है ना!''

निम्मी ने माँ को भोजन परोसकर दिया। माँ ने पहला कोर खाया ही था कि निम्मी ने पूछा– ''माँ कैसा बना है। अच्छा है ना।''

''हम्म...'' माँ सिर हिला देती है। अब निम्मी ने अपनी थाली परोसी और खाने बैठी। जैसे ही खाना मुँह में डाला तो ताप से बोल उठी, ''छिः...सब्जी में तो नमक ज्यादा हो गया है पिताजी! माँ आप तो बोली, भोजन बहुत अच्छा है। आप ये कैसे खाना खा रहे हो?'' माँ ने निम्मी ने कहा,''निम्मी भोजन बहुत अच्छा अच्छा बना है बेटा! मुझे इसमें कोई कमी नहीं लग रही है। देखो बेटा! नमक ही थोड़ा तेज है, पर तुमने इस भोजन में अपना प्यार डाला तो इसमें स्वाद भी आ गया है।'' माँ ने मुस्कुराते हुए निम्मी को बड़े प्यार से समझाया। अब निम्मी को अपनी भूल का अनुभव होने लगा कि कैसे उसने माँ के साथ दोपहर में अच्छा व्यवहार नहीं किया। माँ के इस प्यार को देख वह रोने लगी और माँ के गले जाकर लिपट गई। बोली–''माँ, मुझे माफ कर दो। आज के बाद मैं कभी भी आपसे बुरा व्यवहार नहीं करूँगी। माँ! पिताजी सही कहते हैं तुम हमारी कितनी चिंता करती हो,''मुझे क्षमा कर दो माँ! मेरी प्यारी माँ! मुझे माफ कर दो।''

तभी पिताजी ने कहा, ''निम्मी अब बताओ भोजन कौन अच्छा बनाता है। निम्मी या माँ।''

निम्मी ने प्रसन्न होकर कहा, ''माँ।''

और अब रसोई से दुपहर का भोजन थाली में परोस कर लाती है और मजे से चटखारे लेते हुए खाने लगती है। पिताजी माँ की ओर देखकर मुस्कुराने लगे और पलकें झपकाते हुए मानो यह कह रहे थे कि अब सब ठीक है। मनुष्य को हमेशा दूसरे के काम का सम्मान करना चाहिए, उसे सदैव आदर देना चाहिए, न कि उसका अपमान करना चाहिए।

– घाटकोपर, पूर्व मुंबई (महा.)

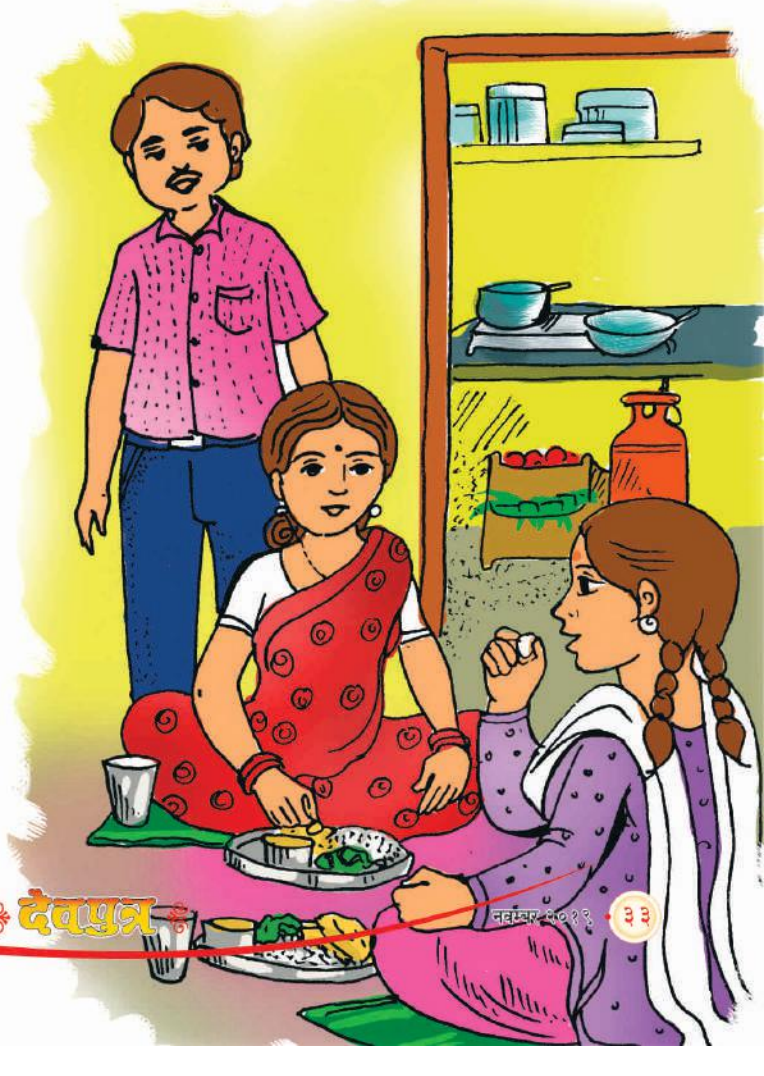

चलो चन्द्रलोक में

कविता

प्रमोद सोनवानी 'पुष्प'

हम ने भेज दिया है बच्चो,
चन्द्रलोक को यह संदेश।
सकल विश्व में सबसे अच्छा,
अपना प्यारा भारत देश।।

चन्द्रलोक के राजा को हम,
देश का हाल सुनायेंगे।
देश बढ़ेगा कैसे आगे,
सबक सीख यह आयेंगे।।

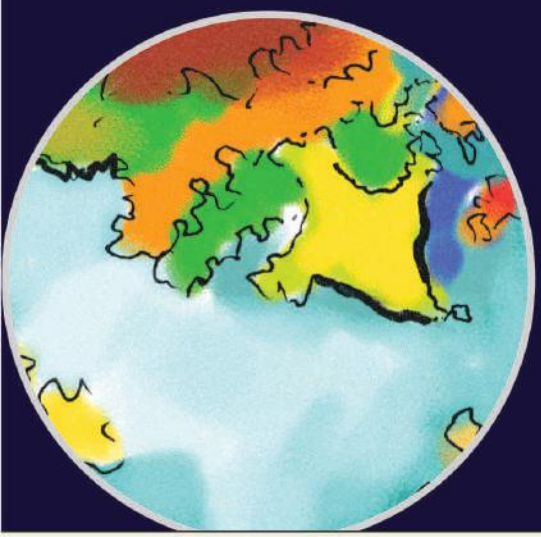

चन्द्रलोक की दुनिया का सच,
चहुँ ओर बगरायेंगे।
चलो-चलें जी चन्द्रलोक में
हम सबको समझायेंगे।।

यहाँ बढ़ रहीं है जनसंख्या,
चलो वहाँ हम जायेंगे।
चन्द्रलोक में झूम-झूमकर,
गीत खुशी के गायेंगे।।

- तमनार (छ.ग.)

जंगल में मंगल

कविता

दिनेश दर्पण

झांझ बजाये झबरा भालू-
बंदरी छम-छम नाच दिखाये,
ढमढम ढोल बजाये चूहा-
बंदर खड़ा-खड़ा झुंझलाये,
बंशी बजाये हाथी दादा
कोयल मीठे गीत सुनाये,
गिटार बजाये नन्हा खरहा-
गदहा अपना नृत्य दिखाये।
तबला बजाये जिराफ भाई-
मोर पिहू-पिहू टेर लगाये,
इसी तरह सब मिलजुल कर-
जंगल में मंगल को आये।

-तराना (म.प्र.)

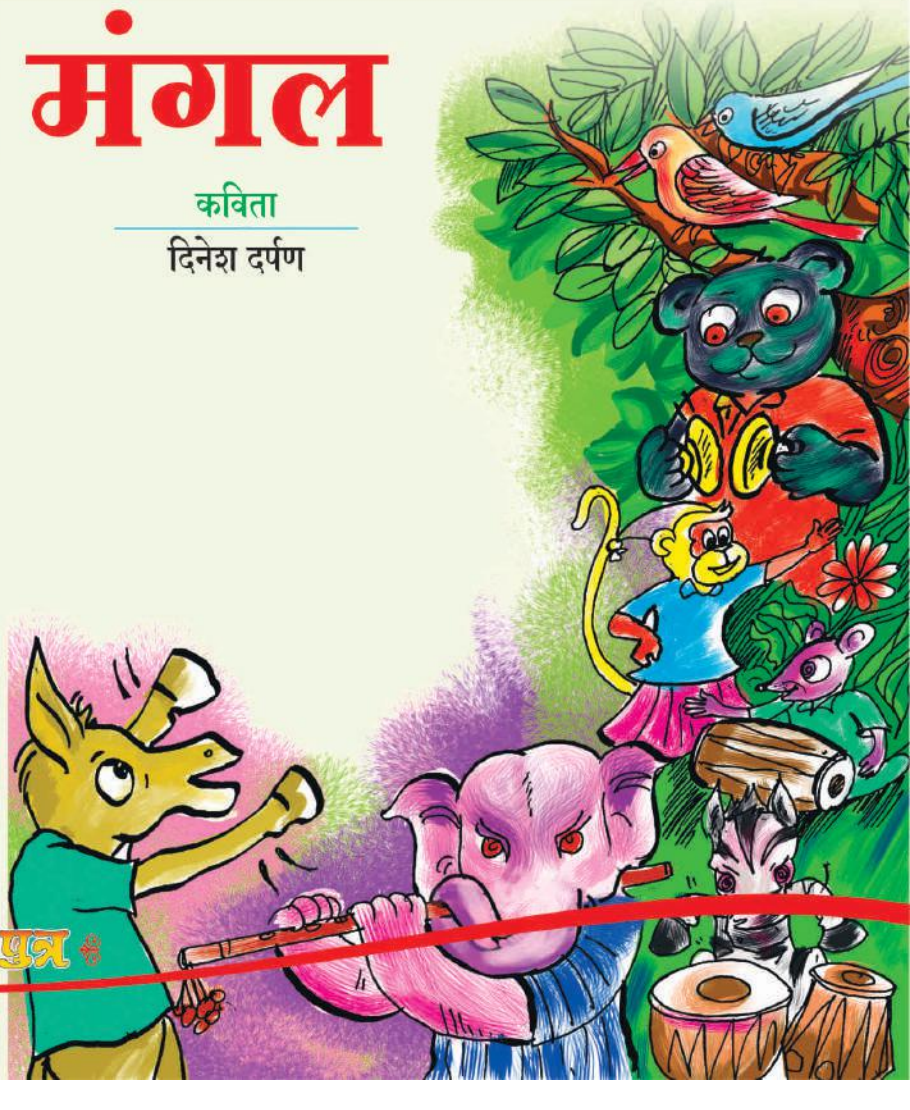

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

तमिलनाडु का राज्यवृक्ष

पंखिया ताड़

• डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत का यह वृक्ष अनोखा,
जग में पाया जाता।
वियतनाम अमरीका तक से,
इसका गहरा नाता।
लम्बा मोटा बेलन जैसा,
सीधा तना निराला।
सौ फुट ऊँचा बिना डाल का,
काले छल्लों वाला।

उगता अपने आप कहीं यह,
कहीं उगाया जाता।
पंखे जैसी बड़ी पत्तियों,
से यह छत्र सजाता।
आधे पके फलों का पानी,
सबकी प्यास बुझाता।
और पके फल वाला गूदा,
व्यंजन कई बनाता।

• भोपाल (म.प्र.)

अनिवार्य आवश्यकताएँ

कहानी

अंकुश्री

रमेश, सुरेन्द्र, विक्रम और गोविन्द चारों मित्र थे। वे एक ही विद्यालय में पढ़ते थे। इसी कारण उनमें मित्रता हो गई थी। मगर उनकी मित्रता पढ़ने–पढ़ाने के लिए नहीं, विद्यालय से बाहर की गतिविधियों के लिए थी। छुट्टी से पहले विद्यालय से निकल जाने, इधर–उधर घूमने और धमा–चौकड़ी करने का उनका स्वभाव था। इधर उनमें एक नई प्रवृत्ति हो गई थी। विद्यालय से बाहर निकलने के बाद वे चाट–पकौड़ी आदि खाने लगे थे।

विद्यालय से निकल कर चारों मित्र कभी आइस्क्रीम के ठेले पर चले जाते थे तो कभी कोल्ड्रिंक्स की दुकान पर। उनके खाने–पीने का खर्च विक्रम उठाया करता था। विक्रम के पिताजी व्यवसायी थे। उसके पास पैसे की कमी नहीं थी। मगर एक दिन उसके मस्तिष्क में एक बात आई। उसने सोचा कि खाते तो सभी है मगर खर्च में अकेला करता हूँ। आखिर ऐसा कब तक चलेगा। उसने अपने मित्रों से कहा, ''हम सभी मिलजुल कर खाते–पीते हैं तो खर्च भी मिल–जुल कर करना चाहिए।''

विक्रम की बात मित्रों को सही लगी। रमेश और सुरेन्द्र को इसमें दिक्कत भी नहीं थी। मगर गोविन्द मित्रों पर खर्च करने की स्थिति में नहीं था। वह गरीब घर का लड़का था। इस तरह खाने–पीने के लिए घर से पैसा लाने में उसे कठिनाई थी। उसके घर में किसी तरह से खाने–पीने का जुगाड़ हो पाता था। वह विद्यालय भी कभी आधे पेट खाकर तो कभी भूखे पेट ही चला जाया करता था।

अगले दिन सुरेन्द्र की बारी पड़ी उसके पास रुपये नहीं थे, मगर घर में रुपयों की कमी नहीं थी। मेज के अलमारी में पिताजी के नोट रखे रहते थे। उसने वहाँ से कुछ नोट निकाल लिये। विद्यालय से निकलने के बाद चारों मित्र आइस्क्रीम के ठेले पर चले गए। उस दिन सबने मँहगे कप वाली आइस्क्रीम खाई।

उसके बाद रमेश की बारी आई। उसकी माँ के बटुए में काफी रुपये रहते थे। लेकिन उसे पता था कि मित्रों के साथ गुलछर्रे उड़ाने के लिए माँ रुपये नहीं देगी। उसे यह भी पता था कि बना किसी से पूछे कहे रुपये निकाल लेना चोरी है। फिर भी उसने माँ के बटुए में से कुछ रुपए निकाल लिए। इस तरह विद्यालय से निकलने के बाद मित्रों की उस दिन की पार्टी पूरी हो गई।

चार मित्रों में से तीन की बारी पूरी हो गई थी। अब गोविन्द बच गया था, अगले दिन उसी की बारी थी। घर आने के समय रास्ते में वह इसी चिंता में था कि रुपये का प्रबंध कहाँ से कर पाएगा। उसे पता था कि माँ के पास पैसे की कमी है, मांगने पर मिलेगा नहीं। पिताजी बीमार थे, इसलिए उनसे भी पैसे की बात नहीं की जा सकती थी। पैसे की जुगाड़ की चिंता में वह गृहकार्य भी नहीं कर पाया। जब वह खाने बैठा तो उसे भोजन भी अच्छा नहीं लगा। आधा पेट खाकर ही उठ गया। रात में सोने गया तो वह बहुत देर तक सोचता रहा कि पैसे का इंतजाम कहाँ से हो पाएगा।

सुबह जब गोविन्द की नींद टूटी तो वह इस बात को लेकर चिंतित था कि मित्रों के बीच खाली हाथ कैसे जाएगा। वह अपना बस्ता तैयार कर विद्यालय के लिए निकलने वाला था। तभी उसकी दृष्टि मेज पर गई। वहाँ दो सौ का एक नोट रखा हुआ था। पिताजी बिस्तर पर थे। माँ उन्हें अस्पताल ले जाने की तैयारी में लगी थी। वह धीरे से दो सौ का नोट मेज पर से उठा कर अपनी जेब में रखा और विद्यालय निकल गया।

रास्ते में वह उसी नोट के बारे में सोचते जा रहा था। पहली बार उसने माँ या पिताजी के दिये बिना रुपए लिए थे। यह बात उसके दिमाग में बार–बार कौंध जाती थी कि वह बिना किसी को बताए मेज पर से रुपए उठा लाया। विद्यालय से निकलने के बाद मित्रों ने उसके पैसे से आइस्क्रीम खाई। मगर उसे आइस्क्रीम का स्वाद फीका–फीका लग रहा था। मेज पर से उठाये गए दो सौ

रुपये के नोट की बात बार-बार उसके में मस्तिष्क घूम रही थी।

विद्यालय से आने पर गोविन्द ने दिखा कि माँ बाहर बैठी हुई है। माँ बहुत चिंतित दिख रही थी। घर के अंदर जाने पर पता चला कि पिताजी का स्वास्थ्य अधिक खराब हो गया है। माँ ने बताया, ''आज पिताजी को अस्पताल ले जाना था। कल उधार रुपए का प्रबंध करने की बहुत कोशिश की थी। तीन-तीन जगह उधार मांगने गई थी, मगर खाली हाथ लौटना पड़ा था।'' कुछ रुक कर माँ ने आगे बताया, ''आज सुबह शर्मा काकी के यहाँ गई थी। मैंने उन्हें बताया कि पिताजी की तबीयत अत्यधिक खराब हो गई है। पूरी बात सुनने पर उन्होंने दो सौ रुपये उधार दिये थे। नोट लाकर मैंने मेज पर रखा था। तैयार होकर अस्पताल के लिए निकलने लगी तो देखा कि नोट वहाँ नहीं था। मेज के आगे-पीछे और घर में इधर-उधर चारों तरफ खोजा। मगर दो सौ का वह नोट कहीं नहीं मिला। इस कारण पिताजी को आज भी अस्पताल नहीं ले जा सकी।''

गोविन्द माँ की बात चुपचाप सुन रहा था। पूरी बात सुनने-समझने के बाद उसे लगा कि काटो तो खून नहीं है। उसके कारण पिताजी की चिकित्सा बाधित हो गई थी। वह माँ से चिपक गया और फूट-फूट कर रोने लगा। जब कुछ स्थिर हुआ तो उसने अपनी मित्र मंडली और खाने-पीने की बातें माँ को बता दी। उसके बाद उसने कहा, ''खिलाने की आज मेरी बारी थी। मेज पर नोट देखा तो उठा लिया। मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई, मुझे क्षमा कर दो।''

माँ चुपचाप गोविन्द की बातें सुन रही थी। गोविन्द ने कहा, ''मैं अब उस मित्र मंडली में नहीं रहूँगा और उन सब से बात भी नहीं करूँगा। मैं उन लोगों के साथ कैसे जुड़ गया मुझे यह पता भी नहीं चल पाया। माँ! सब कुछ बिना सोचे समझे हो गया।''

पूरी बात सुनने के बाद माँ ने कहा, ''इसीलिए कहा गया है कि मित्रता हो या संबंध, बराबरी में ही ठीक होता है। सबकी सामर्थ्य और आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं। कुछ लोगों की अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए कोई चिंता नहीं करनी पड़ती। उनके घर की आर्थिक सम्पन्नता इतनी मजबूत होती है कि सारी आवश्यकताएँ स्वतः पूरी हो जाती हैं अर्थात् आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ती। मगर कुछ लोग अपनी अनिवार्य आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं कर पाते हैं। विद्यालय जाने का उद्देश्य पढ़ाई करना है। मित्रों के साथ घूमना या खाना-पिना नहीं। अपने उद्देश्य को याद रख कर उसे पूरा करना ही सफलता की मूल है।''

दूसरे दिन से ही गोलू अपनी मित्र-मंडली से अलग हो गया। सीधे घर से विद्यालय घर जाने-आने लगा। उसका ध्यान अब पूरी तरह पढ़ाई की ओर केन्द्रित हो गया था।

- रांची (झारखण्ड)

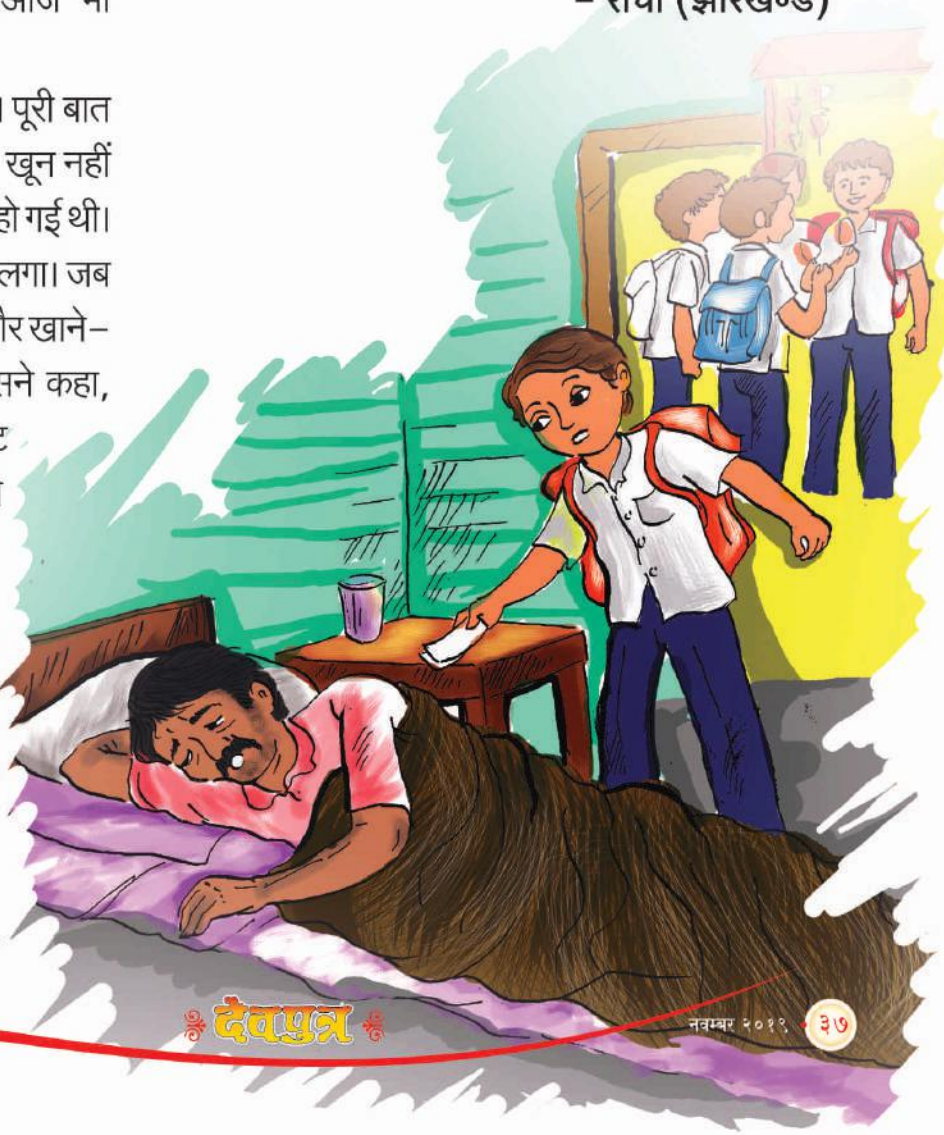

बिन्दु मिलाओ- रंग भरो

● राजेश गुजर

सूझबूझ

कहानी

कीर्ति श्रीवास्तव

जंगल का राजा शेर बड़ा ही क्रूर था। उसको जब भी भूख लगती वो किसी भी पशु को मार कर खा जाता। जिस कारण से जंगल में पशुओं की संख्या भी कम होती जा रही थी।

जंगल के सभी पशु बहुत भयभीत और चिंतित रहते थे। पर वह डर के कारण राजा के सामने कुछ भी कहते नहीं थे। राजा के आतंक से पूरा जंगल थर–थर कांपता था। कोई भी पशु अपने घर से बाहर नहीं निकलता था।

वहीं वीरू हाथी बहुत ही हिम्मत वाला था। वह सभी पशुओं को समझाता था और कहता था कि डरने से कुछ नहीं होगा तुम सभी को राजा का सामना करना होगा।

डर के कारण कोई भी उसकी बातों पर ध्यान ही नहीं देता था।

समय ऐसे ही गुजरता गया और राजा और भी अत्याचारी हो गया।

अंततः जंगल के सभी पशुओं ने जंगल छोड़कर जाने का मन बना लिया था। ये बात वीरू को सही नहीं लग रही थी। पर वह विवश था।

तभी एक दिन राजा पूरे जंगल में इधर से उधर हक्का बक्का होकर दौड़ लगा रहा था। सभी पशु बस दूर खड़े होकर देख रहे थे। तभी झूमरू जिराफ ने साहस जुटाते हुए राजा ने पूछा ''राजा! क्या हो गया? आप इधर–उधर क्यों दौड़ रहे हैं?''

''मेरा बेटा कान्हा न जाने कहाँ चला गया? मिल ही नहीं रहा, क्या तुम उसे ढूँढने मेरी सहायता करोगे?'' राजा ने रोते हुए कहा।

झूमरू ने भी मौके पर चौका मारते हुए कहा– ''क्षमा करना राजा! मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर पाऊँगा। आज मैं तुम्हारी सहायता करूँगा और कल तुम मेरे ही बच्चे को मार कर खा जाओगे। मैं बस प्रार्थना करूँगा कि कान्हा जल्दी मिल जाए।''

राजा फिर आगे बड़ा तब उसे चीकू बन्दर मिला। चीकू ने भी पेड़ पर लटके–लटके राजा से पूछा कि ''आप इतना परेशान क्यों हो रहे हो?''

''मेरा बेटा गुम गया है, क्या तुम मेरी सहायता करोगे?'' राजा ने चिंतित स्वर में कहा।

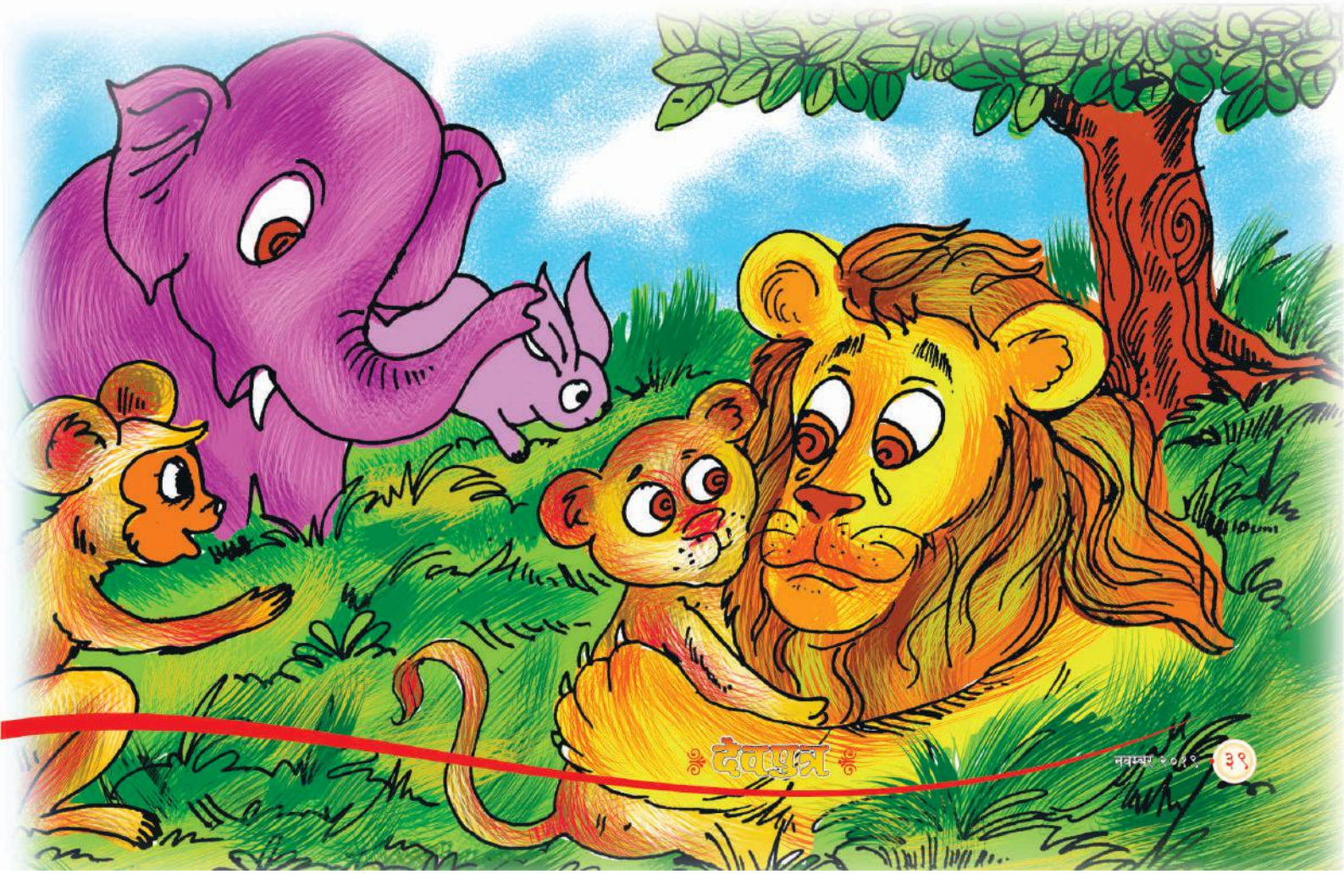

चीकू ने भी राजा से मना कर दिया और बोला– ''मैं बस भगवान से प्रार्थना करूँगा कि वह शीघ्र ही मिल जाए।''

राजा अपने बेटे को पूरे जंगल में पागलों की तरह इधर से उधर ढूँढ रहा था और जो भी पशु मिल रहा था उससे वह सहायता की गुहार लगा रहा था और सभी उसे मना करते जा रहे थे और कुछ तो डर के कारण वहाँ से भाग ही जाते थे।

जब कान्हा कहीं नहीं मिला तो हारकर राजा एक पेड़ के नीचे बैठ गया और उसके आँखों से आँसू बहने लगे। मैंने सभी पशुओं के साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया है। उसी का परिणाम है कि ये लोग मेरी मदद नहीं कर रहे। ना जाने मेरा बेटा कहाँ होगा? राजा मन ही मन खुद को कोस रहा था।

भगवान मेरे बेटे से मुझे मिला दो। मैं कभी भी किसी पशु पर अत्याचार नहीं करूँगा। मैं एक अच्छा राजा बन कर दिखाऊँगा। बस मेरे बेटे से मुझे मिलवा दो। राजा ऐसा कहकर जोर–जोर से रोने लगा।

''पिताजी!'' तभी राजा को अपने बेटे की आवाज सुनाई दी।

राजा ने प्रसन्नता से पलट कर देखा तो उसका बेटा कान्हा उसके पीछे खड़ा था। उसने दौड़कर अपने बेटे को गले लगाया और रोते हुए पुचकारने लगा।

तभी राजा की दृष्टि वहाँ खड़े सभी पशुओं पर पड़ती है और वह उसने पूछता है कि तुम्हें कान्हा कहाँ मिला?

''राजा! कान्हा तो हमारे ही पास था। वह तो हम आपको ये अनुभव कराना चाहते थे कि जब आप हमारे बच्चों को मारकर खा जाते हैं तो हम पर क्या बीतती होगी।'' वीरू ने राजा से कहा।

इतने में झूमरू भी बोल पड़ा ''अब आपको हमारे दुःख की अनुभूति हो गई होगी। आज आपका बेटा थोड़ी देर के लिए आपसे दूर हुआ तो आप पागलों की तरह जंगल में दौड़ लगा रहे थे। हम तो आपके डर से वह भी नहीं कर पाते हैं।''

राजा को अपनी भूल की अनुभूति हो गई थी। उसने शीश झुकाते हुए सभी पशुओं से हाथ जोड़कर क्षमा मांगी और वो एक अच्छा राजा बनकर दिखाएगा, ये वचन भी दिया।

राजा ने जोर से कहा– ''आप को कभी भी कोई समस्या हो तो बिना डरे मेरे पास आ सकते हो।'' सभी ने राजा की बात पर ताली बजाकर प्रसन्नता व्यक्त की।

राजा ने प्रसन्न होकर सभी पशुओं को भोज पर बुलाया। सभी जानवर खुशी से उछल पड़े।

जंगल के सभी पशुओं ने वीरू को भी धन्यवाद दिया और कहा कि– ''वीरू तुम्हारी ही सुझबूझ से आज हम सुरक्षित हो पाये हैं।''

राजा अपने बेटे को गोद में लेकर गुफा की ओर चला गया।

इस घटना के बाद सभी जानवर जंगल में बिना डरे हँसी–खुशी से रहने लगे।

– भोपाल (म.प्र.)

आपकी पाती

• राजा चौरसिया, उमरियापान, कटनी (म.प्र.)

देवपुत्र का सितम्बर २०१९ अंक समय पर मिला, धन्यवाद। हमेशा की तरह मुखपृष्ठ प्रासंगिक है। मिशन चंद्रयान–२ के संदर्भ में सम्पादकीय 'अपनी बात' के अंतर्गत बाल लीलाएँ और भोली कल्पनाएँ चित्रित हैं। आपका यह कथन सौ टंच सच है कि चन्द्रयान का चन्द्रमा तक पहुँचना पूरे देश के लिए गौरव का विषय है। यह हमारी बड़ी उपलब्धि है। इंटरनेट पर सर्च, टी.वी. और नई सोच की २१वीं सदी में भी कान्हा को थाली के पानी में दिखने वाले चन्दामामा जस के तस आनंदित करते रहेंगे। पास से मामाजी कैसे भी दिखें लेकिन वे दूर से तो वैसे ही पुए खिलाते नजर आएँगे। ज्ञान–विज्ञान के युग में भी मामाजी के प्रति भांजे लोगों का प्यार सदाबहार रहना सुनिश्चित है। बचपन का भाव संसार अद्‌भुत है। गद्य, पद्य एवं स्तंभ की प्रस्तुतियाँ सराहने योग्य हैं।

|| झलकारी बाई जयंतीः २२ नवम्बर ||

झलकारी बाई

कविता

डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

दिखती सुंदर रानी सी
साहस बल मारे किलकारी।
लगती रानी लक्ष्मी जैसी
नाम था उसका झलकारी।

नहीं किसी से वह डरती
हर काम में आगे रहती।
रानी ने उसको पहचाना
सेना में कर ली भरती।

स्त्री सेना बनाकर उसने
सेना का बल बढ़ा दिया।
अंग्रेजों से भिड़ गई
नाक में दम उनका किया।

रानी का स्नेह पूरा मिला
विश्वास पात्र वह उनकी थी।
रानी की सच्ची सेवक बन
प्राण न्यौछावर करती थी।

- ग्वालियर (म.प्र.)

यह देश है वीर जवानों का (२)

परमवीर चक्र विजेता मेजर पीरू सिंह

१७-१८ जुलाई १९४८ की रात के डेढ़ बजे का समय था। चन्द्रमा अस्त था रात भयानक काली, कंपनी हवलदार मेजर पीरूसिंह की टुकड़ी ११०० फीट ऊँचाई पर अपने लक्ष्य दारापारी पर कब्जा करने बढ़े जा रही थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद श्रीनगर से खतरा टलते ही भारतीय सेनाएं 'उरी' पर ध्यान केन्द्रित किए थी। कश्मीर को आक्रमणकारियों से मुक्त कराना उनका लक्ष्य था। इसी अभियान के अन्तर्गत यह टुकड़ी दुश्मनों की गोली वर्षा का बहादुरी से सामना करते बढ़ी जा रही थी। प्लाटून कमाण्डर सूबेदार भीकासिंह को गोली लगी तो मेजर पीरुसिंह ने कमान सम्हाल रखी थी। दुश्मन ऊँचाई पर बंकरों से सुरक्षित हो गोलाबारी कर रहा था। गोलियाँ और ग्रेनेड दो ओर से वार कर रहे थे। पीरूसिंह के आधे साथी या तो बलिदान हो चुके थे या घायल थे। राजा रामचंद्र की जय बोलते पीरूसिंह निर्भयता से दुश्मन की मध्यम मशीन गन के पास जा पहुँचे और अपनी स्टेनगन से गोलाबारी करने वाले दुश्मनों को मार डाला फिर उनके बंकर में कूद पड़े ओर बाकी का भी सफाया कर डाला। साथी सब इनके भी मारे जा चुके थे या बहुत घायल थे। मेजर पीरूसिंह अकेले रह गए तभी शत्रु के एक ग्रेनेड से उनका मुखमण्डल रक्त से नहा गया। 'राजा रामचन्द्र की जय' नारा फिर गूंजा और मेजर अगले बंकर में जाकर दो सिपाहियों का काल बने। तीसरे बंकर में पहुँचते हुए उनके सिर में गोली लगी पर मेजर ने अपना अंतिम ग्रेनेड फेंक तीसरे बंकर को भी सदा के लिए शान्त कर दिया। पीछे से उत्साहित और सैनिक आ गए और दारापारी पर भारतीय सेना का कब्जा हो गया।

अद्‌भुत शौर्य, असाधरण वीरता, दुर्दम्य साहस की प्रतिमा कंपनी हवलदार मेजर पीरूसिंह को कृतज्ञ राष्ट्र ने परमवीर चक्र से सम्मानित किया।

आधी समझ गहरी उलझ

चित्रकथा : देवांशु वत्स

बड़े लोगों के
हास्य प्रसंग

श्री आशुतोष मुखर्जी एक बार बहुत ही सीधे–सादे वेश में रेल के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में सफर कर रहे थे। उसी डिब्बे में एक अंग्रेज भी था और उसे अपने साथ ही एक भारतीय का सफर करना बड़ा बुरा लग रहा था। श्री आशुतोष मुखर्जी से उसने कई बार डिब्बा बदलने के लिए कहा, पर उन्होंने उसे अनसुना कर दिया। अंग्रेज का गुस्सा बढ़ता गया और रात्रि में जब श्री आशुतोष सो गए, तो उसने उनका जूता उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। इधर जब सुबह आशुतोष जी की नींद खुली, तब उन्हें अपना जूता कहीं नजर नहीं आया। अंग्रेज यात्री बड़े आराम से खर्राटे भर रहा था, पर उन्हे समझते देर न लगी कि यह शरारत किसकी थी। उन्होंने पास ही टंगा उस अंग्रेज का कोट उठाया और खिड़की से बाहर फेंककर आराम से बैठ गए। थोड़ी देर बार जब अंग्रेज की नींद खुली तो अपना कोट न देखकर उसने पूछा, ''मेरा कोट कहाँ है?'' ''आपका कोट?'' श्री आशुतोष जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, ''आपका कोट मेरा जूता लाने गया है।''

*****

एक बार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का आशीर्वाद पाने की इच्छा से एक लिक्खाड़ महोदय उनके घर पहुंचे। साथ में वह अपनी पुस्तकों का बंडल भी लेते आए थे। औपचारिकता के बाद साहित्य पर बातचीत शुरु हुई।

पचासों पुस्तकों के रचयिता महोदय ने अपना बंडल खोला और पुस्तकें द्विवेदीजी को दिखलाने लगे।

''यह देखिए मैंने यह पुस्तक रात–भर में लिख डाली थी।''

''और यह बहुत पुस्तक मैंने एक महीने में पूरी कर दी थी हालांकि यह मेरे जानकारी के क्षेत्र की चीज न थी।''

''और यह उपन्यास हिन्दी में अपने ढंग का अनूठा है, मैंने इसमें ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

''और यह उपन्यास...''

आठ दस पुस्तकें दिखाने के बाद वे सज्जन द्विवेदीजी की मुद्रा देखकर कुछ सहम गए। उनको उत्तर देने के लिए द्विवेदी जी ने केवल एक वाक्य कहा, ''हाँ, हाँ ठीक है, अब तक आप बहुत लिख चुके, अब थोड़ा पढ़िए भी!''

शिशु गीत

कविता

सुनयना अवस्थी

(१)

चुन्नू भइया ओढ़ रजइया,
काँप रहे हैं थर-थर-थर।
माँ मुझको नहीं नहाना,
पानी से लगता है डर।

(२)

पाँच बजे उठ जाती गुड़िया।
सभी काम निपटाती गुड़िया।
प्रतिदिन वह विद्यालय जाती।
नहीं डाँट दीदी की खाती।

(३)

टमटम बने टमाटर,
उस पर मिर्ची की आई बारात।
धनिया, हरा पुदीना, पालक,
खीरा, ककड़ी, प्याज के साथ।
नाच कूद कहू जी लुढ़के,
दबे सभी बन गया सलाद।

(४)

चिंटू चीखा हुर्र
उड़ी चिरैया फुर्र
उड़कर जा बैठी डाली
चिंटू ने मारी ताली।

– लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

गोपी की ओर इशारा करते हुए नेहा रोहन से कहती है - "मैं उसके दादा के इकलौते बेटे की बेटी हूँ।" गोपी और नेहा आपस में क्या होंगे?

(उत्तर इसी अंक में)

जादुई घड़ी

कहानी

जयति जैन 'नूतन'

चुनमुन प्रायः अपनी दादी से परियों की कहानियाँ सुनती थी। दादी उसे हमेशा कहती थी कि रात को परी आती है और जब वह बच्चों से मिलती है तो उन्हें कुछ ना कुछ उपहार में अवश्य देती हैं। चुनमुन को दादी की बात पर बहुत विश्वास था इसलिए वह हर रात में छत पर जाती थी, आसमान की तरफ देखती थी सम्भवतः उसे कोई परी दिख जाए फिर थोड़ी देर में पुनः लौट आती।

उसने कई बार टूटते हुए तारे देखें और मांगा कि वह परी से मिलना चाहती है। उसी समय एक परी रोज वहाँ से गुजरती थी, वह रोज ही चुनमुन को परी से मिलने की मन्नत मांगते हुई देखती थी। एक दिन उसने सोचा क्यों ना चुनमुन से मिला जाए और उसे उपहार में कुछ अच्छी सी चीज दी जाए।

अगली रात एक रात की परी चुनमुन से मिलने आ गई, वह चुनमुन से मिलकर बहुत खुश हुई और उसने उसे एक घड़ी दी। कहा यदि तुमने किसी की बात पसंद ना आ रही हो तो तुम घड़ी में देखकर चुप बोल देना और सामने वाले की १ घंटे के लिए तुम्हें आवाज सुनाई नहीं देगी और वह परी उड़ गई।

एक रोज उसके पिता उसे महान व्यक्तियों के बारे में जानकारी दे रहे थे, काफी देर सुनने के बाद चुनमुन ऊब गई और उसने घड़ी में देखकर चुप बोल दिया। अब उसे पिता की कहीं कोई बात सुनाई नहीं दे रही थी, पिता ने अपनी बात समाप्त करने से पहले बोला कि कल उन्हें कार्यालय के काम से नगर से बाहर जाना है इसलिए तुम जल्दी उठकर विद्यालय साइकिल से चली जाना। लेकिन चुप हो जाने के कारण चुनमुन को कुछ सुनाई नहीं दिया।

अगली सुबह चुनमुन की माँ उसे सुबह ६ बजे उठाने आई तो चुनमुन नहीं उठी, सुबह ७ बजे चुनमुन की माँ फिर उसे उठाने आई तब जबरदस्ती चुनमुन को उठना पड़ा और माँ ने बताया उसे कि आधे घंटे में तुम विद्यालय के लिए निकलो वरना तुम्हें देर हो जाएगी। चुनमुन ने कहा अगर मैं ७.४५ बजे भी निकलूँ तो पिताजी मुझे १५ मिनट में विद्यालय छोड़ देंगे। माँ ने बताया कि पिताजी सुबह ५ बजे ही नगर से बाहर निकल गए और उन्होंने तुमसे कल कहा भी था कि जल्दी उठकर विद्यालय साइकिल से चली जाना, चुनमुन उदास हो गई।

जल्दी–जल्दी वह विद्यालय पहुँची तो देखा सारे बच्चे गणित के टेस्ट की तैयारी कर रहे थे। चुनमुन ने सभी

छः अंगुल मुस्कान

अध्यापिका- राजेश, तुम यह बतलाओ यमुना नदी कहां बहती है?
राजेश- जमीन पर
अध्यापिका- मुझे मानचित्र में बतलाओ कहाँ बहती है?
राजेश- ''जब नदी मानचित्र के ऊपर से बहेगी तो मानचित्र गल नहीं जाएगा।''

★★★★★

सिपाही (दरोगा से) महोदय, कुछ जरूरी काम है एक दिन की छुट्टी चाहिए।
दरोगा - छुट्टी चाहिए तो तुम्हें मेरे एक प्रश्न का उत्तर देना पड़ेगा।
सिपाही - रहने दीजिए घर पर पत्नी के उत्तर देते-देते परेशान हो गया हूँ। अब आप भी प्रश्न पूछने लगे।

★★★★★

एक छोटे बच्चे से प्रश्न किया गया- तुम माँ के पास सोओगे या पिताजी के पास?
बच्चे ने तुरंत जवाब दिया- मैं तो कूलर के पास सोऊंगा।

★★★★★

अध्यापक (रजनी से) यह बतलाओ बादल काले रंग के क्यों होते हैं?
रजनी - जब पूरे-पूरे दिन धूप में घूमेंगे तो काले तो होंगे ही।

जादुई घड़ी

से पूछा कि आज ऐसा क्या है? जो तुम लोग इतना पढ़ाई कर रहे हो, तो उन्होंने हँसते हुए बोला कि शायद तुम भूल गई, ३ दिन पहले शिक्षक ने टेस्ट का बोला था। चुनमुन के होश उड़ गए क्योंकि ३ दिन पहले की कक्षा में चुनमुन ने गणित के शिक्षक की आवाज १ घंटे के लिए मौन कर दी थी। अब विद्यालय का मुख्यद्वार बंद हो चुका था चुनमुन चाह के भी घर नहीं जा सकती थी। अब उसे टेस्ट देना ही था, उसने कई बहाने बनाए कि उसे टेस्ट न देना पड़े लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ उसे टेस्ट देना पड़ा और ३० अंक में उसको ८ अंक आए जो कक्षा में सबसे कम थे। शिक्षक ने उसे टेस्ट पुस्तिका पर अपने मातापिता के हस्ताक्षर करवाने को कहा, चुनमुन को सदमा लगा जा रहा था कि आज दूसरी बार उसके मन के अनुसार काम नहीं हुआ। शिक्षक की बात को वह टाल नहीं सकती थी वरना प्राचार्य तक खबर पहुँच जाती।

चुनमुन बीमारी का बहाना बनाकर तीन दिन विद्यालय नहीं गई, जब पिताजी लौटे तो उसने टेस्ट कॉपी पर हस्ताक्षर करवाए और बहुत डाँट खाई। कुछ दिन सब ठीक चला, फिर एक दिन विद्यालय में चुनमुन को मस्ती सूझी और उसने इस बार सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका को मौन कर दिया। शिक्षिका कक्षा के बाद बच्चों को वार्षिक परिक्षा की तैयारी कैसे करनी है? क्या पढ़ना है? बता रही थी लेकिन चुनमुन को कुछ नहीं सुनाई दिया।

अगले दिन कक्षा में शिक्षिका ने चुनमुन को खड़ा किया और कल याद करके आने को दिया विषय पूछा, चुनमुन चुपचाप थी क्योंकि उसे कुछ पता ही नहीं था। शिक्षिका ने लापरवाह बोलकर चुनमुन को बहुत डाँटा और शिकायत को उसकी डायरी पर लिख दिया।

चुनमुन को बहुत बुरा लगा क्योंकि पूरी कक्षा के बच्चों को उस विषय के बारे में जानकारी थी, सिवाय उसके। यह तीसरी बार हुआ था जब चुनमुन को सबके सामने अपमानित होना पड़ा था। चुनमुन घर आकर बहुत रोयी तभी वह परी आई और चुनमुन ने उसे वह घड़ी वापस दे दी। यह कहकर कि इसकी वजह से उसको बहुत लज्जित होना पड़ा। आवाज को मौन कर देने से उसे आवश्यक बातें पता ही नहीं चली और कक्षा में डांट पड़ी। परी को चुनमुन पर दया आ गई और उसने वह घड़ी वापस ली। साथ ही कक्षा में जितनी बार भी उसने शिक्षक की आवाज को मौन पर किया, वह सारी उसे फिर से सुनने को दी। पूरी रात चुनमनु ने शिक्षक की बातों को सुना और अपना गृहकार्य किया। चुनमुन धीरे धीरे अपनी कक्षा में सर्वश्रेष्ठ बच्चों में गिनी जाने लगी।

– भोपाल (म.प्र.)

सही उत्तर– उलझ गए : गोपी और नेहा आपस में भाई बहन हैं।

मेरा घोड़ा

कविता

अब्दुल मलिक खान

मेरा घोड़ा, इतना दौड़ा।
इतना दौड़ा, इतना दौड़ा।
नदी-घाट सब पार कर लिए,
मुझको पर्वत पर जा छोड़ा।

मेरा घोडा, इतना दौड़ा।
इतना दौड़ा, इतना दौड़ा।
पंख लगे हों जैसे उसके,
मुझको बादल पर जा छोड़ा।

मेरा घोड़ा, इतना दौड़ा।
इतना दौड़ा, इतना दौड़ा।
करने लगा हवा से बातें,
मुझको चन्दा पर जा छोड़ा।

तारों को समझा वह दाना,
शुरु कर दिया, उसको खाना
खाया था बस, उसने थोड़ा,
तभी पड़ा बिजली का कोड़ा।

मेरा घोड़ा, सरपट दौड़ा
इतना दौड़ा, इतना दौड़ा
तेजी से वह नीचे आया
मुझे समन्दर में जा छोड़ा।

-भवानीमंडी (राज.)

बोतल बोली

कहानी

हरिन्दरसिंह गोगना

पानी की टोंटी विनय से बहुत परेशान थी। वह जब भी स्नानगृह में नहाने या हाथ धोने जाता असावधानी में टोंटी खुली छोड़ आता। आज सुबह भी विनय ने ऐसा ही किया। उसकी माँ ने आकर टोंटी बंद की।

''तुम्हें कितना समझाया है कि पानी की बहुत कमी है। दिन में २ बार ही तो पानी आता है पर तुम हो की पानी व्यर्थ में खुला छोड़ जाते हो।'' माँ ने उसे जोर से डांटा।

टोंटी को लगा कि जो बात वह विनय से कहने वाली थी उस की माँ ने कह दी है।

विनय बहुत अव्यवस्थित था। विद्यालय से घर आ कर बस्ता इधर-उधर फेंक देना, पढ़ते समय टी.वी. लगा लेना, भोजन करते समय कॉमिक्स पढ़ना उसका स्वभाव था। उस से माता-पिता परेशान थे।

एक सुबह विनय नहाने लगा। तभी अचानक पानी चला गया। उस समय विनय के पूरे बदन पर साबुन लगा हुआ था।

वह चिल्लाया, ''माँ... रसोई में पानी रखा है जरा देना तो...।''

''बेटा आज रसोई में भी पानी नहीं है। मैं बाहर वाले नल से पानी लेने जा रही हूँ।'' माँ ने कहा।

''ओफ्फ! क्या समस्या है। पानी को भी अभी जाना था।'' विनय झुंझलाया।

अचानक स्नानगृह में किसी के हंसने की आवाज आई। विनय चौका, ''कौन?''

''क्यों मजा आ रहा है न अपनी लापरवाही का...?'' विनय ने देखा यह आवाज तो टोंटी से आ रही है।

''तुम टोंटी बोल रही हो क्या...?'' उस ने आश्चर्य से पूछा।

''बिलकुल सही पहचाना। मैं तुम्हारे कामों से बहुत दिनों से परेशान हूँ। जब आवश्यकता होती है तुम मुझे उपयोग करते हो। फिर जाते समय मुझे बंद करने की भी आवश्यकता नहीं समझते। तुम्हारी माँ ने तुम्हें कितनी बार टोका है। लेकिन तुम्हारे कान पर तो जूं तक नहीं रेंगती।'' टोंटी बोली।

''लेकिन...लेकिन....।'' विनय बोला, मुझे विद्यालय जाने में देरी हो रही है। मेरे तन पर साबुन लगा है। आज मुझे प्रार्थना सभा में भाषण देना है। ऐसी हालत में मैं विद्यालय कैसे जा पाऊँगा?''

''आज तो ऐसे ही जाओगे ताकि तुम्हें पानी का मोल पता लग सके।'' टोंटी उस के हाल पर हँसी।

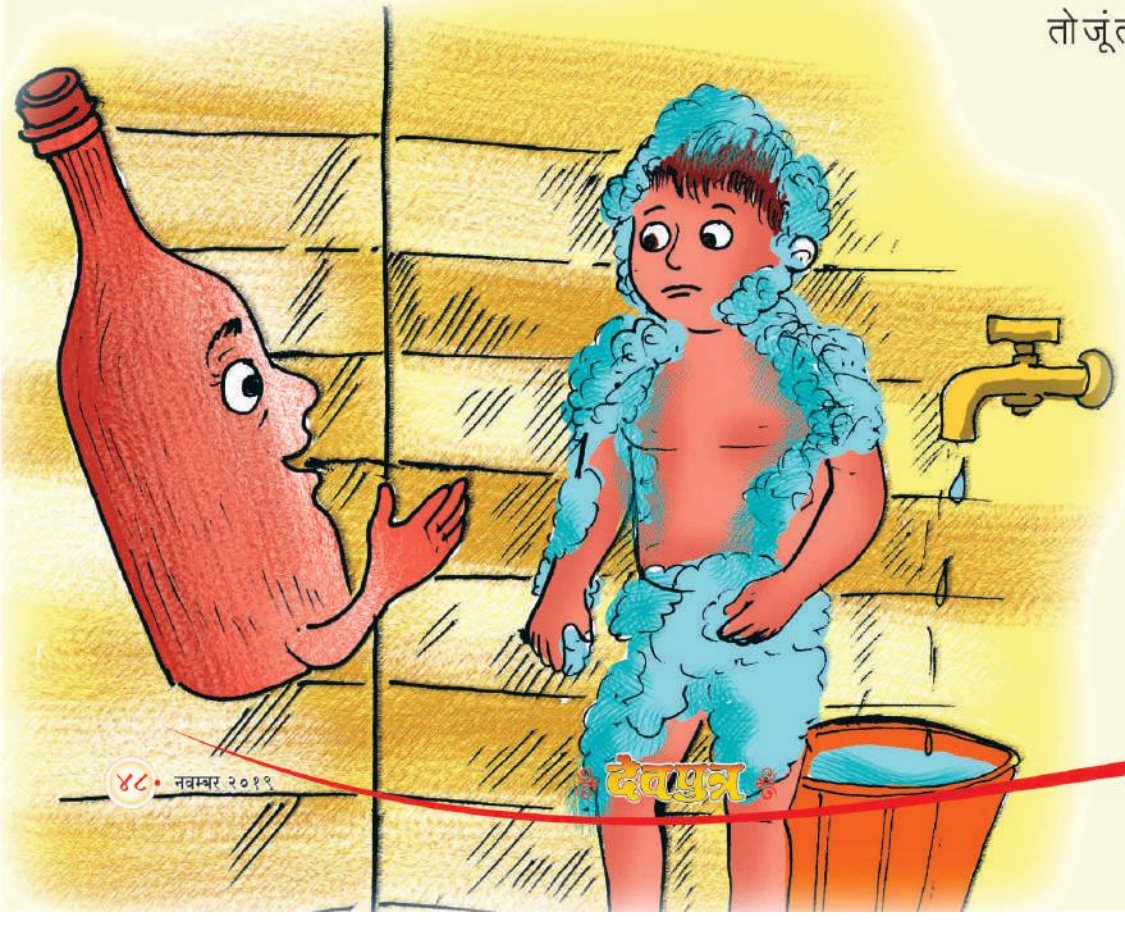

''बिलकुल ठीक कर रही हो टोंटी बहन! लापरवाह बच्चों को ऐसे ही शिक्षा देना चाहिए।'' स्नानागृह से आई एक और आवाज ने विनय को फिर आश्चर्य में डाल दिया।

उस ने पीछे मुड़कर देखा। कोने में पड़ी एक खाली बोतल बोल रही थी।

''तुम बोतल...।''

विनय बात पूरी भी न कह पाया था कि बोतल फिर बोली, ''हाँ मैं बोतल ही बोल रही हूँ। दिल्ली से यहाँ लाई गई हूँ। तुम्हारे दिल्ली वाले मामाजी जब पिछले दिनों तुम्हारे घर आये थे। तो मुझे स्नानगृह में छोड़ गए थे। दिल्ली से चलते समय उन्होंने मुझे खरीदा था। रास्ते में अपनी प्यास बुझाने के लिए। वह तो मैं एक से अधिक बार उपयोगी हूँ इससे माँ ने मुझे फेंका नहीं वैसे भी अब एक बार ही उपयोग आने वाली प्लास्टिक वस्तुओं का उपयोग जो नहीं करना है फिर भी तुम्हें शायद दिल्ली की हालत का पता नहीं।'' विनय ध्यान से बोतल की बातें सुन रहा था।

''दिल्ली में प्रदूषण बढ़ जाने से अब साफ पानी की कमी आम बात हो गई है। ज्यादातर लोग बोतलों में भरा मिनरल वाटर ही पीते है। गरीब लोग तो बस्तियों के बाहर लगी सरकारी टोंटियों से पानी भरते हैं। बहुत से लोगों को तो लाइनों में लग कर पानी भरना पड़ता है। एक तुम हो कि पानी की कद्र ही नहीं करते। याद रखो अगर कोई आवश्यक वस्तुओं का मान नहीं करता तो उसे समय आने पर संकट का सामना करना पड़ता है। जैसे आज तुम कर रहे हो।''

बोतल की बातों का विनय पर प्रभाव हुआ। वह बोला, ''तुम ठीक कह रही हो। मुझे आज अनुभव हुआ कि पानी कितना अनमोल है। आज से मैं कभी भी पानी का अपमान नहीं करूँगा।'' बोतल को विनय पर तरस आ गया। विनय को अपनी भूल का अनुभव हो गया था। बोतल बोली, टोंटी बहन इसे इस बार क्षमा कर दो। आगे से इस ने कभी पानी का अपव्यय किया तो अच्छा सबक सिखाना।''

''ठीक है लेकिन अगर इस ने मुझे रुष्ट किया तो इस को पछताना पड़ेगा।'' टोंटी ने कहा।

''नहीं मैं अब फिर कभी तुम्हें रुष्ट नहीं करूँगा। बल्कि अब अच्छे मित्र की तरह तुम्हारा ध्यान रखूँगा। विनय ने कहा। टोंटी से पानी की तेज धार बहने लगी। उस दिन के बाद विनय में बदलाव आ गया। उस के माता–पिता चकित थे और प्रसन्न भी।

– पटियाला (पंजाब)

।। समाचार ।।

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' को टेढ़ा पुल के लिए साहित्य गौरव सम्मान

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' को उनके बाल उपन्यास **टेढ़ा पुल** के लिए राँची में झारखंड का प्रतिष्ठित स्पेनिन साहित्य गौरव सम्मान प्रदान किया गया।

सम्मान स्वरूप उन्हें प्रख्यात साहित्यकार डॉ. अशोक प्रियदर्शी और डॉ. कुमार संजय ने ग्यारह हजार एक रूपए की धनराशि, अंगवस्त्र और प्रशस्ति पत्र भेंट किया।

ज्ञातव्य है कि वर्ष २०१५ में इलाहाबाद में साहित्य भंडार प्रकाशन से प्रकाशित डॉ. नागेश का यह उपन्यास कन्नड़ भाषा में डोंकु सेतुबे और मराठी में बणकदार पुल के नाम से अनूदित हो चुका है। डॉ. नागेश के इस उपन्यास में अभिभावकों के आपसी मतभेदों से सन्तति पर पड़ने वाले प्रभावों और तद्जनित संघर्षों को अत्यंत मार्मिकता से उजागर किया गया है।

पुस्तक परिचय

चन्दामामा आओ न!

मूल्य २००/-

पृष्ठ ११२

बाल जगत में कविता और गीत बच्चों की सर्वप्रिय विधा है। इस विधा के श्रेष्ठ रचनाकार **श्री अश्वनी कुमार पाठक** के इस बाल एवं शिशु गीत संग्रह में आपकी ५८ सुमधुर बहुरंगी विषयों पर मनभावन गीत व कविताएँ है।

प्रकाशन – गगन स्वर बुक्स, ३० राम पार्क निकट थाना साहिबाबाद, गाजियाबाद ०५

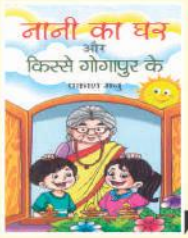

नानी का घर और किस्से गोगापुर के

मूल्य ४००/-

पृष्ठ १९२

भारतीय बाल साहित्य जगत के मूर्द्धन्य रचनाकार **श्री प्रकाश मनु** की सिद्ध लेखनी से निकली ४० बाल कहानियों का अनुपम पिटारा जो आपको गुदगुदाएगा, लुभाएगा और सिखाएगा भी।

प्रकाशन – ज्ञान गंगा, २०५बी चावड़ी बाजार, दिल्ली ११०००६

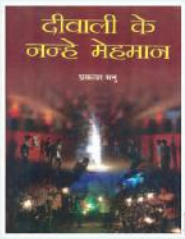

दीवाली के नन्हे मेहमान

मूल्य ३५०/-

पृष्ठ १७६

श्री प्रकाश मनु जी की ही बाल मनोविज्ञान एवं बाल मन की उड़ानों की पारखी लेखनी से निकली १९ बाल कहानियों का रोचक कहानी संग्रह जिनकी मनभावन कहानियाँ आपको भरपूर आनंदित करेंगी।

प्रकाशन – विद्या विकास एकेडेमी, ३६३७ नेताजी सुभाष मार्ग,
दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२

सपनों की दुनिया

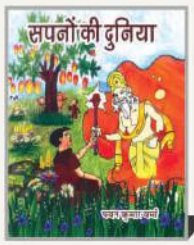

मूल्य १५०/-

पृष्ठ ५५

रोचक बाल कथा संसार के कुशल रचनाकार **श्री पवन कुमार वर्मा** की १० सुरुचिपूर्ण मनोहर बाल कहानियाँ।

प्रकाशन –विकल्प प्रकाशन, २२२६ बी गली नं. ३३, पहला पुराना
सोनिया विहार, दिल्ली ११००९०

डॉ. दर्शनसिंह आशट और उनका बाल साहित्य

शोध ग्रन्थ

मूल्य २५०/-

पृष्ठ १४८

हिन्दी और पंजाबी के वरिष्ठ बाल साहित्यकार **डॉ. दर्शनसिंह आशट** के व्यक्तित्व और कृतित्व पर देश के प्रख्यात बाल साहित्यकारों के शोध पूर्ण आलेखों का विख्यात बाल साहित्य शोध निदेशक, समीक्षक और रचनाकार **डॉ. शकुन्तला कालरा** द्वारा संपदित शोध ग्रंथ

प्रकाशन

बसन्ती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
एम–१५, मुनीष प्लाजा, २० अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली ०२

देवपुत्र परिवार-पत्र मेला

बच्चो! हम सबके जीवन में अपनेपन का भाव अपने परिवार से ही प्रारंभ करते हैं। यह वाट्सएप और ई-मेल का युग है ऐसा माना जाता है लेकिन आपकी पुरानी पीढ़ी अर्थात् अनेक के दादा-दादी, नाना-नानी इस नए प्रचलन से अनभिज्ञ हैं ऐसे परिवारजनों के लिए पत्र वर्षों पुराना माध्यम होकर भी उतना ही सशक्त है।

देवपुत्र आपके लिए एक विशिष्ट आयोजन कर रहा है वह है 'देवपुत्र परिवार-पत्र मेला'। इसमें सम्मिलित होने के लिए आपको पाँच पत्र लिखना होंगे।

एक- अपने दादा-दादी को

दो- अपनी माँ को

तीन - अपने आचार्य, दीदी/शिक्षक को

चार- किसी ऐसे व्यक्ति को जो आपके परिवार का सदस्य तो नहीं पर आपके परिवार से उसका संबंध इतना है कि उसे आप पारिवारिक रिश्तों का नाम देकर पुकारते हैं जैसे रिक्शे वाले भैया, फूल वाली अम्मा, सफाई वाली काकी, किराने वाले काका आदि।

पाँच - पाँचवा पत्र लिखिए अपनी भारत माता यानी देश के नाम, इस पत्र में आप देश के लिए क्या करना चाहते हैं अपना वह संकल्प और उसे पूरा करने की आपकी योजना का उल्लेख करें।

पत्र लिखते समय हम चाहते हैं कि आप अंकल/आंटी, सर/मेडम आदि के स्थान पर भारतीय सम्बोधन का उपयोग करें।

पत्र में आप अपने स्वाभाविक विचार लिखें न कि उसे सुने सुनाए, रटे रटाए आदर्श से ठसाठस भर दें। हाँ सहज रूप से आप किसी आदर्श या प्रेरणा से प्रभावित हैं तो उसका उल्लेख किया जाना चाहिए।

- पत्र सुवाच्य अक्षरों में हिन्दी भाषा में लिखा हों।
- यह पत्र लगभग ३०० से ५०० शब्दों में हो।
- प्रतियोगिता केवल अष्टमी से द्वादशी तक अध्ययनरत बच्चों के लिए है। अतः अपनी कक्षा का प्रमाण पत्र अपने प्राचार्य/प्रधानाचार्य से प्रमाणित कर अवश्य भेजिए।
- पत्र हमें ३१ दिसम्बर, २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो जाएं।
- अपनी प्रविष्टि (पाँचों पत्रों की एक प्रविष्टि मानी जाएगी)के साथ प्रविष्टि पत्र पृथक से कागज पर स्वयं लिखकर भेजें।

प्रविष्टि भेजने का पता है - संयोजक देवपुत्र, परिवार-पत्र मेला
द्वारा/देवपुत्र, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

पत्र का प्रारूप होगा-

श्रीमान संयोजक महोदय,
देवपुत्र परिवार पत्र मेला
इन्दौर

महोदय मैं.....कक्षा .....देवपुत्र द्वारा आयोजित देवपुत्र परिवार पत्र मेला में सहभागी होना चाहता हूँ/चाहती हूँ। मेरी प्रविष्टि (पांचों पत्र) सम्मिलित करें। मेरा पता है -

नाम..... पिता.....

पता.....

पिन कोड | | | | | | | दूरभाष | | | | | | | | | | |

हस्ताक्षर प्रतिभागी

प्रत्येक प्रकार के तीन-तीन सर्वश्रेष्ठ पत्र पुरस्कृत किए जाएंगे।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१०/२०१९
प्रेषण तिथि ३०/१०/२०१९
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना